P.P.N. (P.G.) College, Kanpur

96/12 Mahatma Gandhi Marg, Kanpur -208001

●Telefax: (0512)2361924 ● Mob.: 8707538344●

●Website: www.ppncollege.org● ●email:ppncollegekanpur@gmail.com●

3.3.2. (QnM): ***Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years***

INDEX

S. No.	Calendar Year	Page Number
1.	2023	1-17
2.	2022	18-45
3.	2021	46-71
4.	2020	72-89
5.	2019	90-99

PROF. ABHA SINGH
IQAC
CONVENOR

PROF. SUMAN SINGH
NAAC
CONVENOR

PROF. ANOOP KUMAR SINGH
PRINCIPAL
PPN PG COLLEGE KANPUR

As per National Education Policy-2020

B.A. 1st Year
Semester - II

English Poetry

Dr. M. K. Chaudhari
Dr. R. N. Patel

Dr. Mithlesh Kumar Chaudhari, who hails from Bahraich, holds NET and D.Phil. in English from the University of Allahabad. He is an Assistant Professor in the Department of English, Jawaharlal Nehru Smarak P.G. College, Maharajganj, Uttar Pradesh. He has to his credit dozens of research papers published in journals of international repute. He authored Readers' Guide to Thoughts, Schools and Movements in English Literature (2019); New Wares of English Literature (2020); English Poetry: Texts with Objective Questions (2021); and co-authored English Poetry: Texts and Forms (2022); Objective English Poetry (2022); An Emerald Guide to English Literature (2018).

Dr. Ram Naresh Patel is an Assistant Professor in P.P.N. P.G. College, Kanpur. He holds NET and Ph.D. He has written many research papers. He has also served in Bank and Indian Air Force earlier. He has very vast experiences and holds multi-faceted personality.

Aman Prakashan
(Publishers & Distributors)
104-A/80 C, Rambagh, Kanpur-208012 (U.P.)
Mob No. 8090453647, 7518424062
Email-Id : amanprakashanknp@gmail.com Website : www.amanprakashan.com

ISBN : 978-93-95107-36-5

मनोविज्ञान का उद्भव एवं विकास

मुख्य संपादक:
मधु अस्थाना

संपादक:
आभा सिंह, सुरभि मिश्रा एवं रितु मोदी

मनोविज्ञान का उद्भव एवं विकास

पुस्तक *'मनोविज्ञान का उद्भव एवं विकास'* मनोविज्ञान के उद्भव से लेकर पूर्ण विकास यात्रा का विवरण प्रस्तुत करती है। अपनी विकास यात्रा में मनोविज्ञान को जिन-जिन मार्गों व पड़ावों से गुजरना पड़ा, यह पुस्तक उन्हें क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करती है।

पुस्तक का प्रथम खंड मनोविज्ञान के पाश्चात्य सम्प्रदायों को समाकलित करता है। पाश्चात्य मनोविज्ञान के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यूनानी विरासत से लेकर संरचनावाद, प्रकार्यवाद, व्यवहारवाद, गेस्टाल्टवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद के साथ-साथ आधुनिक विचारधाराओं जैसे परावैयक्तिक मनोविज्ञान, संज्ञानात्मक क्रांति एवं बहुसंस्कृतिवाद इसमें सम्मिलित हैं।

द्वितीय खंड मनोविज्ञान के भारतीय परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है। भारतीय मनोविज्ञान एवं उसके विकास के सम्बन्ध में हिन्दी भाषा में पुस्तकों के अभाव को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक का पूरा एक खंड मनोविज्ञान की भारतीय दृष्टि को समर्पित है। मनोविज्ञान में भारतीय दर्शन के स्तम्भों (भगवद्गीता, वेदान्त, बौद्ध धर्म, सूफीवाद एवं समाकलित योग आदि) के योगदान को इस खंड में समाहित किया गया है। साथ ही भारत में अकादमिक मनोविज्ञान किस प्रकार विकसित हुआ, इसका भी विवरण इस खंड में उपलब्ध है। मनोविज्ञान के अध्ययन के विभिन्न प्रतिमानों का विशद विवरण भी दिया गया है।

पुस्तक ऐतिहासिक रूप से मनोविज्ञान की प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों विचारधाराओं को सन्तुलित रूप में प्रस्तुत करती है। सभी सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों एवं प्रमुख विचारकों के छायाचित्र यथासम्भव देने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक में दिए गए कुछ प्रारम्भिक भारतीय मनोवैज्ञानिकों के छायाचित्र निश्चय ही छात्र-छात्राओं को अपने अग्रज मनोवैज्ञानिकों से जुड़ाव महसूस कराने में सहायक होंगे।

इस सम्पादित पुस्तक में देश के अनेक विद्वान मनोवैज्ञानिकों व शिक्षकों का योगदान सम्मिलित है। इस पुस्तक की विषय वस्तु का संयोजन नवीन शिक्षा नीति के अनुरूप विभिन्न विश्वविद्यालयों में संचालित हो रहे पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यह पुस्तक राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (यू.जी.सी. नेट) सहित सिविल सर्विसेज आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु भी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है

@mlbdofficial

MOTILAL BANARSIDASS PUBLISHING HOUSE
SINCE 1903
MLBD

ISBN 978-93-5676-424-8

₹ 495

Psychology

naraina@mlbd.in
www.mlbd.in
+91 89 2999 9000

4

खंड ब: देशज तथा भारतीय दृष्टि

अध्याय 16 303-345

प्रतिमान: अवधारणा तथा प्रकार

गिरीश्वर मिश्र एवं इंदीवर मिश्र

अध्याय 17 346-356

विज्ञान व आध्यात्मिकता

वन्दना द्विवेदी

अध्याय 18 357-372

आत्मज्ञान एवं कल्याण: भारतीय दृष्टि

आभा सिंह

अध्याय 19 373-399

भारतीय दर्शन एवं मनोविज्ञान

मधुरिमा प्रधान, नगमा जावेद एवं कीर्ति मदनानी

अध्याय 20 400-424

'मानस' की अवधारणा और योग

गिरीश्वर मिश्र

अध्याय 21 425-446

परा-वैयक्तिकता: भारतीय परिप्रेक्ष्य

भरत पंडा

अध्याय 22 447-470

भारत में शैक्षणिक मनोविज्ञान

मधुरिमा प्रधान, नगमा जावेद एवं विनय कुमार

अध्याय 23 471-490

आधुनिक मनोविज्ञान: भारतीय प्रभाव

निशा सिंह

अध्याय 24 491-526

भारत में आधुनिक मनोविज्ञान का विकास: प्रमुख प्रवृत्तियाँ

गिरीश्वर मिश्र

अध्याय–18

आत्मज्ञान एवं कल्याण : भारतीय दृष्टि
(Self Knowledge and Well-being : Indian View)

वेदांत एवं स्व की संकल्पना

भगवद्गीता गीता एवं स्व

बौद्ध दर्शन एवं स्व की संकल्पना

स्व एवं जैन दर्शन

पंचकोष का सिद्धांत

आनंद की विभिन्न स्थितियाँ

त्रिगुण

भारतीय चिंतन व्यापक दृष्टि वाला है। भारतीय दर्शन के विकास में कई संस्कृतियों की झलक मिलती है। भारतीय दर्शन में प्रमुख रूप से हिंदू दर्शन, बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन शामिल है। भारतीय दर्शन मूलत: लोक कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। इसमें प्रत्येक जीवित प्राणी की प्रकृति को समझने का प्रयास किया गया है। भारतीय दर्शन किसी व्यक्ति को केंद्र में रख कर नहीं वरन् पूरे समुदाय अथवा विश्व कल्याण की भावना से प्रेरित है। भारतीय दर्शन में आत्म संप्रत्यय का अध्ययन कई सन्दर्भों में किया गया है। एक प्रमुख दृष्टि के अनुसार आत्मा ही वास्तविक स्व है, शेष सब कुछ उसके साथ जुड़ जाने वाली वस्तुएँ या उपाधियाँ होती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति - 2020 पर आधारित
(सामान्य न्यूनतम पाठ्यक्रम)

जैव रसायन एवं शरीर क्रिया विज्ञान

डॉ. रेनू गोयल
डॉ. [illegible]

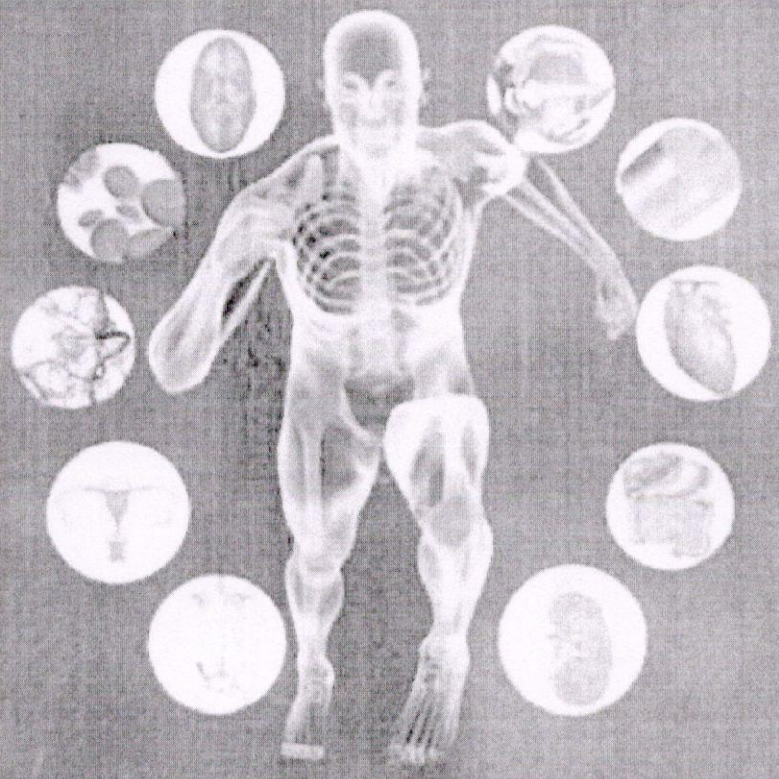

बी. एस. सी. प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर (जन्तु विज्ञान)

DLPD

Available on
amazon
flipkart.com
DIVYA LAKSHMI
PUBLISHERS & DISTRIBUTORS
Meerut-250001 (UP)

NEP 2020
COMPLIANT
IV Semester

क्वांटम यांत्रिकी एवं विश्लेषणात्मक तकनीक

(Quantum Mechanics and Analytical Techniques)

• एच.सी. खेरा • प्रकाश चन्द्रा
• निधि श्रीवास्तव • मीतकमल

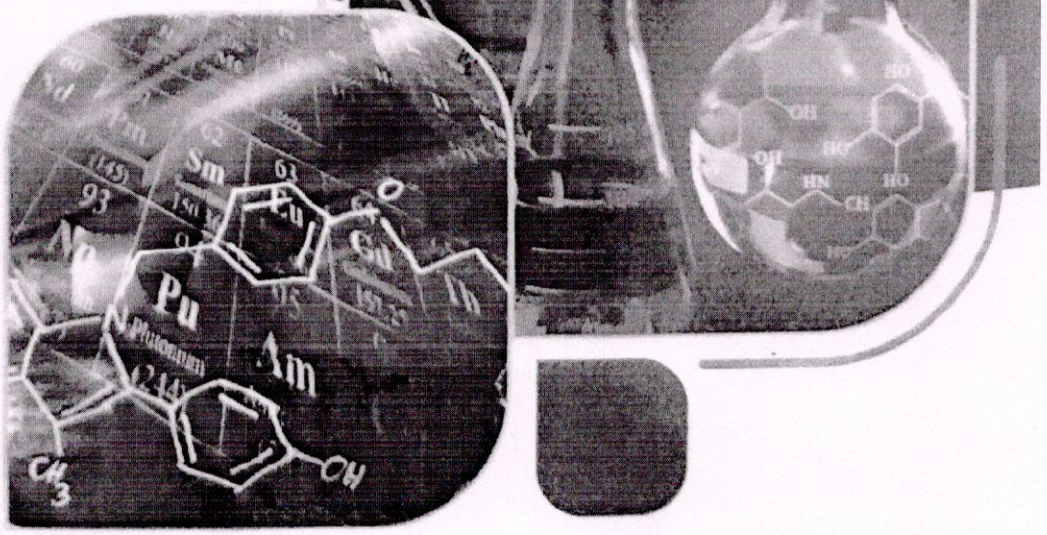

A Pragati Edition

OUR USEFUL BOOKS FOR NEP-2020

BOOKS FOR POST GRADUATE

Electronic Devices and Circuits	*Sundar Singh, Sanjeev Tyagi*
सगुण काव्य	गीता सिंह

BOOKS FOR UNDERGRADUATE

Mathematics

Differential Equations and Mechanics	*Bhupander Singh, S.K. Pundir*
Differential Equations	*Bhupander Singh, S.K. Pundir*
Mechanics	*Bhupander Singh, S.K. Pundir*
Target Achievers Differential Equations	*Bhupander Singh, S.K. Pundir*
Target Achievers Mechanics	*Bhupander Singh, S.K. Pundir*

Physics

Perspectives of Modern Physics & Basic Electronics	*S.L.Gupta, Sanjeev Kumar*
Perspectives of Modern Physics & Basic Electronics	*Sunder Singh, D.K.Tyagi, R.K. Dwivedi*
आधुनिक भौतिकी के परिपेक्ष्य एवं आधारभूत इलेक्ट्रानिकी	*जे.पी. अग्रवाल, विनय दुआ*
Practical Physics-Basis Electronics & Instrumention	*S.L. Gupta, V. Kumar*

Chemistry

Quantum Mechanics & Analytical Techniques	*J. Singh, H.C. Khera, Jaya Singh, P. Chandra*
क्वांटम यांत्रिकी एवं विश्लेषणात्मक तकनीक	*एच.सी. खेरा, प्रकाश चन्द्रा, निधि श्रीवास्तव, मीत कमल*
Practical Chemistry-Instrumental Analysis	*S.K. Agarwala, Keemti Lal*
Quantum Mechanics & Analytical Techniques (Gurtu-Khera)	*J.N. Gurtu, H.C. Khera*
क्वांटम यांत्रिकी एवं विश्लेषणात्मक तकनीक (गुर्टू-खेरा)	*जे.एन. गुर्टू, एच.सी. खेरा*

Botany

Economic Botany, Ethnomedicine & Phytochemistry	*Vijai Malik, Pranita Malik*
Economic Botany, Ethnomedicine & Phytochemistry	*Deepak Kumar, H. Ahmed, J. Pathak*
वनस्पतिकी, नृजाति चिकित्सा एवं पादप रसायन विज्ञान	*अनिल कुमार, सरोज चाहर, अम्बरीश कुमार, संदीप कुमार*
Practical-Commercial Botany & Phytochemical Analysis (English-हिन्दी)	*O.P. Sharma*

Zoology

Gene Technology, Immunology and Computational Biology	*P.K. Agarwal, B.S.Tomar, Neha Mittal*
जीन प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा एवं संगणनात्मक विज्ञान	*पी.जी. यादव, नेहा मित्तल*
Practical-Genetic Engineering & Counselling Lab	*Vasantika Kashyap*

History

आधुनिक विश्व का इतिहास (1453-1950)	*सुमंगल प्रकाश, रत्ना प्रकाश*

हिन्दी

हिन्दी अनुवाद	*सीमा शर्मा*

English

Indian Literature in Translation & Translation Practices	*Pallavi Sharma*

Drawing

कला एवं सौन्दर्य शास्त्र-सिद्धान्त एवं परम्परा	*नीलिमा गुप्ता*

Home Science

आवास एवं प्रसार शिक्षा	*अनामिका चौहान, प्रीति शर्मा*

- **Available on • Amazon • Flipkart • www.pragatiprakashan.in**
- **E-Book is also available for institutes and individuals**

PRAGATI PRAKASHAN,

Pragati Bhawan, 240, W.K. Road, Meerut.

0121-2640642, 2643636, 3500119

9456030891 9411051690

support@pragatiprakashan.in

pragatiprakshan@gmail.com

www.pragatiprakashan.co.in

www.pragatiprakashan.in

ISBN 935531787-5

9 789355 317872

Proceedings of

National Conference on Intellectual Property Rights and Research Ethics (IPRRE-2023)

Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC),

M.L.K.P.G. College, Balrampur (U.P.)

In Association with

National Intellectual Property Awareness Mission,

Ministry of Commerce, Govt. of India

Sponsored by

National Assessment & Accreditation Council (NAAC),

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Editor in Chief

Prof. J.P. Pandey

Co-Editor in Chief

Prof. Tabassum Farkhi

Editors

Dr. Sadguru Prakash

Dr. Rishi Ranjan Pandey

Dr. Jitendra Kumar

ISBN-978-93-5470-643-1

Proceedings of

National Conference on

Intellectual Property Rights and Research Ethics (IPRRE-2023)

Editor in Chief
Prof. J.P. Pandey

Co-Editor in Chief
Prof. Tabassum Farkhi

Editors
Dr. Sadguru Prakash
Dr. Rishi Ranjan Pandey
Dr. Jitendra Kumar

Organized by
Internal Quality Assurance Cell (IQAC),
M.L.K.P.G. College, Balrampur (U.P.)

In Association with
National Intellectual Property Awareness Mission,
Ministry of Commerce, Govt. of India

Sponsored by
National Assessment & Accreditation Council (NAAC),
An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Address: No -1-B, Sector 10B, Vasundhara Sector 10,
Delhi - 201012, Behind Vanasthali Public School
E-mail: swaranjalipublication@gmail.com
Website: swaranjalipublication.com
Contact No. +91-9810749840/8700124880

12	Importance of Citations in Research Writings	Jitendra Kumar J.P Pandey	62-67
13	Intellectual Property Rights in Present Indian Scenario	Ashish Kumar Lal	68-72
14	Introduction To research Ethics Issues	Ashok Kumar	73-80
15	Copyright Law And Its Modalities	Ranjan Kumar Basak, SiddharthRamprakashPandey, Subham Kumar, Hariom Singh Patel, Surya PratapVerma	81-90
16	Intellectual Property RightsSystem in India	SeemaSrivastava, Varsha Singh, Sushil Kumar Upadhyay, SadguruPrakash	91-96
17	Copyright: An Integral Part of Intellectual Property Rights	Saakshi Sharma	97-104
18	ResearchEthics-Why and how to plan, conduct and report ethically	KritikaTiwari	105-110
19	Plagiarism: am Unethical Practice	SatishPratap Singh[1], Abhishek Singh[2], Sunil Kumar Mishra[3]	111-115
20	Plagiarism and its checking through Software	AkankshaTripathi	116-117
21	Intellectual Property Right of Biological Research with Special References	Rajiv Ranjan Ajay Kumar	118-123
22	Plagiarism: An Introduction	Kamalesh Kumar Mansi Patel	124-127
23	A Study on Intellectual Property Rights and Their Relevance to Scientific and Commercial Sectors	Rahul Kumar Shiv Mahendra Singh	128-134
24	Intellectual Property Rights: In the Context of National Education Policy 2020	Alka Asthana	135-138
25	Copyright Laws in India: Protection to the Author	AlokShukla T. Farkhi	139-141
26	Traditional Medicine And Its Intellectual Property Right (IPR) Issues	Shiv Mahendra Singh Rahul Kumar	142-151
27	Intellectual Property Rights: A Legal Review	Abdul Wahab	152-157
28	An overview of patent in Pharmaceutical Sector in Indian scenario	Shravan Kumar Rahul Yadav	158-162
29	An outline of Intellectual property rights and the patent system in herbal	Rahul Yadav, Shravan Kumar	163-167

 ISBN-978-93-5470-643-1

Chapter/Article 24

Intellectual Property Rights: In the Context of National Education Policy 2020

AlkaAsthana
Department of Economics, P.P.N. College, Kanpur

Abstract: Intellectual property rights (IPRs) hold a key role and act as a pillar in deciding the innovation and new ideas of the youth and evolving India. They not only give strength and encouragement to the researchers to safeguard their interests but also give special privileges to the innovators for a particular period. The IPRs are divided into four different categories: Patents, Copyrights, Trademarks, and Designs.

As a member of the World Trade Organization, India has obliged and compiled the National Education Policy (NEP) 2020 which emphasizes adopting the technology-driven learning approach to develop the skills to enhance the concept of innovation and creativity amongst the crowd. As IPR protects the work of the innovators, in today's era, it is of utmost importance to create awareness regarding the following subject among the scholars and faculty members within the institutes. This would help them to patent their innovations and scholarly research and would also benefit the interest of the stakeholders on the contrary.

As a developing nation and a global leader in the Information Technology and advancement sector, IPRs have also given the upper hand in the upliftment of the mindset of the people by patenting the knowledge of Information Technology and gaining social, technical, and economic benefits to the nation on a worldwide scale. Hence the transmission of IPRs information and its application is of vital importance in the context of NEP 2020 between the scholars.

However widespread awareness needs to be presented in and out of the schools, colleges, and universities to help the knowledge in terms of research & development and the beneficiary in terms of the consumer of that research which would not only help the growth of the demographic place but also a nation as a whole.

Introduction: Intellectual Property (IP) refers to anything created by the human mind for which a person has a legal right to prevent his/ her work over a certain period of time; inventions, brands, concepts, or different forms of creations such as artwork, designing, symbol, technical, scientific or literary works come under IP. Intellectual Property Right (IPR) is a universal term that defines intangible assets which are the properties of an individual or a firm contributing to a geography may it be a state or a nation. It plays a vital role in providing security for all the intangible assets accessible to the public, which can be imitated by anyone in the world as the risk of stealing ideas and concepts are much higher in this modern digitalized world.

The United Nations (UN) has also set up a distinctive department,committed to the advancement and application of intellectual property called as The World Intellectual Property Organization (WIPO). The area on which WIPO focuses is the evaluation and regulation of various International IP legitimate contexts and it also administers various

(14)

SPRINGER LINK

Log in

Menu Search Cart

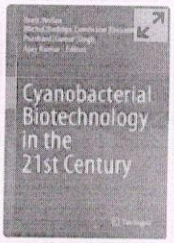

Cyanobacterial Biotechnology in the 21st Century pp 29–50

Cyanobacterial Stress and Its Omics Perspective

Surbhi Kharwar, Arpan Mukherjee, Vinod Kumar & Ekta Shukla

Chapter | First Online: 24 June 2023

171 Accesses

Abstract

Cyanobacteria are prokaryotic oxygenic photoautotrophs exposed to various environmental stresses. Environmental stressors such as nutrient deficiency and high as well as low light conditions affect the growth and development of cyanobacteria. In order to overcome the effect of different stressors, they have evolved several adaptive mechanisms. Nutrients, like sulfur and iron, play a role in photosynthesis, respiration, nitrogen metabolism, and other processes. Different omics approaches show variations of different

Prashant Kumar Singh

Agriculture Research Organization, Volcani Centre, Israel

Ajay Kumar

Rights and permissions

Reprints and Permissions

Copyright information

© 2023 The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Singapore Pte Ltd.

About this chapter

Cite this chapter

Kharwar, S., Mukherjee, A., Kumar, V., Shukla, E. (2023). Cyanobacterial Stress and Its Omics Perspective. In: Neilan, B., Passarini, M.R.Z., Singh, P.K., Kumar, A. (eds) Cyanobacterial Biotechnology in the 21st Century. Springer, Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-99-0181-4_3

.RIS .ENW .BIB

DOI	Published	Publisher Name
https://doi.org/10.1007/978-981-99-0181-4_3	24 June 2023	Springer, Singapore

Print ISBN	Online ISBN	eBook Packages
978-981-99-0180-7	978-981-99-0181-4	Biomedical and Life Sciences Biomedical and Life Sciences (R0)

Check for updates

Cyanobacterial Stress and Its Omics Perspective

3

Surbhi Kharwar, Arpan Mukherjee, Vinod Kumar, and Ekta Shukla

Abstract

Cyanobacteria are prokaryotic oxygenic photoautotrophs exposed to various environmental stresses. Environmental stressors such as nutrient deficiency and high as well as low light conditions affect the growth and development of cyanobacteria. In order to overcome the effect of different stressors, they have evolved several adaptive mechanisms. Nutrients, like sulfur and iron, play a role in photosynthesis, respiration, nitrogen metabolism, and other processes. Different omics approaches show variations of different genes, transcripts, proteins, and metabolites of the affected organism. The present chapter discusses the impact of light and nutrient stress in cyanobacteria and the molecular mechanisms with the involvement of different omics approaches.

Keywords

Cyanobacteria · Light · Sulfur · Iron · Gene expression · Omics · Stress

S. Kharwar
Department of Botany, University of Lucknow, Lucknow, Uttar Pradesh, India

A. Mukherjee
Institute of Environment and Sustainable Development, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India

V. Kumar
Department of Botany, Pandit Prithi Nath College, Kanpur, Uttar Pradesh, India

E. Shukla (✉)
Sunbeam College for Women Bhagwanpur, Varanasi, Uttar Pradesh, India

© The Author(s), under exclusive license to Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2023
B. Neilan et al. (eds.), *Cyanobacterial Biotechnology in the 21st Century*,
https://doi.org/10.1007/978-981-99-0181-4_3

SPRINGER LINK

Log in

Menu Search Cart

Conservation, Management and Monitoring of Forest Resources in India pp 379–408

Approaches and Methodologies on Mapping Vegetation Cover and Biodiversity Status Using Remote Sensing and Spatial Analysis: A Systematic Review

Samrat Deb, Kashif Imdad, Priyank Pravin Patel, Wani Sahul, Samsad Parween, Rayees Rashid & Mohd Rihan

Chapter | First Online: 05 August 2022

190 Accesses

Abstract

Mapping vegetation cover and biodiversity status using remote sensing and spatial technologies has transformed the field of natural resource management. As anthropogenic activities have led to unprecedented changes in biodiversity and vegetation cover throughout the world, these technologies have become very significant in impact assessment and management of these natural resources. Various methods have been used in vegetation and biodiversity mapping especially using remote sensing and special techniques, but there are few review studies covering the entire field of vegetation and biodiversity mapping. The present study has reviewed the various methods and approaches used for mapping vegetation cover. It has tracked its evolution since geospatial technologies have been used for the first time in mapping vegetation till today when advanced models like decision tree and redundancy analysis are being used. This study has used a systematic review protocol for a set of 70 peer-reviewed case studies, which highlight the key analysis, trends, and research paths that have emerged since the evolution of geospatial techniques. The study has also examined the emerging trends and gaps in the existing research on vegetation mapping and biodiversity status. The paper is framed in such a way that its first part deals with the conceptual framework of vegetation mapping and biodiversity status. This part also deals with some related case studies on the important biodiversity regions of the world. The second part of the paper discusses the methods, models, databases, and approaches used in vegetation mapping and biodiversity status in selected case studies. The prime objective of the study was to outline the future trends in vegetation mapping. The review

राष्ट्रीय सुरक्षा का अवधारणात्मक अध्ययन

Conceptual Study of National Security

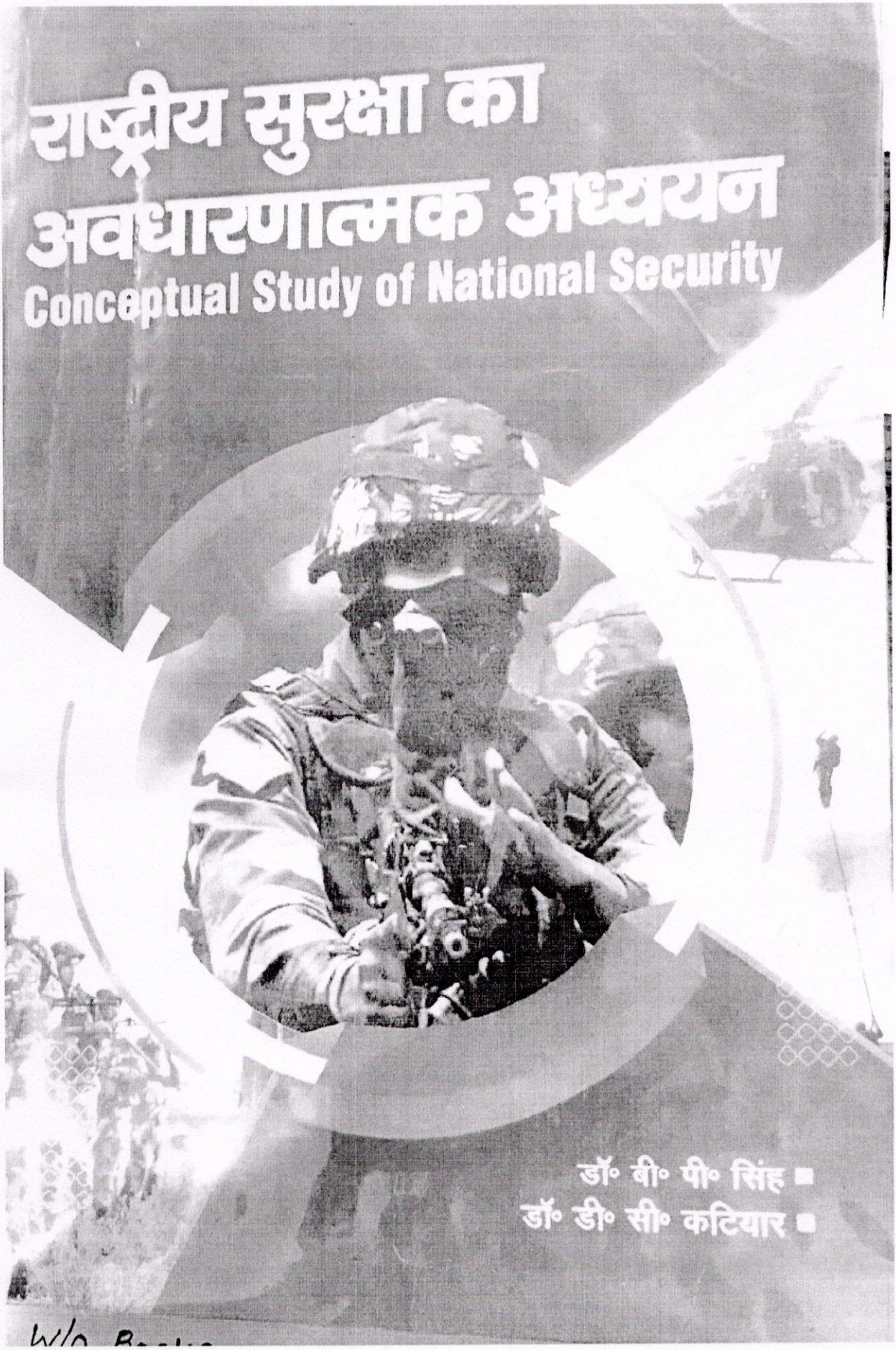

डॉ॰ बी॰ पी॰ सिंह ■
डॉ॰ डी॰ सी॰ कटियार ■

W/o Books

SCAN AnyScanner

● *प्रकाशक :*

चन्द्र प्रकाश एण्ड ब्रादर्स
156/1, कोठी प्यारे लाल
कोठी गेट रोड, हापुड़—245101
फोन : 91-9818660317

● **ISBN** : 978-81-955760-3-6

● प्रथम संस्करण, 2022

● **मूल्य : ₹ 275.00** (दो सौ पिच्चतर रुपये मात्र)

● *लेजर टाइप सैटिंग*
ग्राफिका कम्प्यूटर्स
मेरठ

● *मुद्रक :*
न्यू इण्डिया प्रेस
मेरठ

AnyScanner

As per National Education Policy-2020

Fundamentals of Chemistry

(B.Sc. 1st Year - 1st Semester)

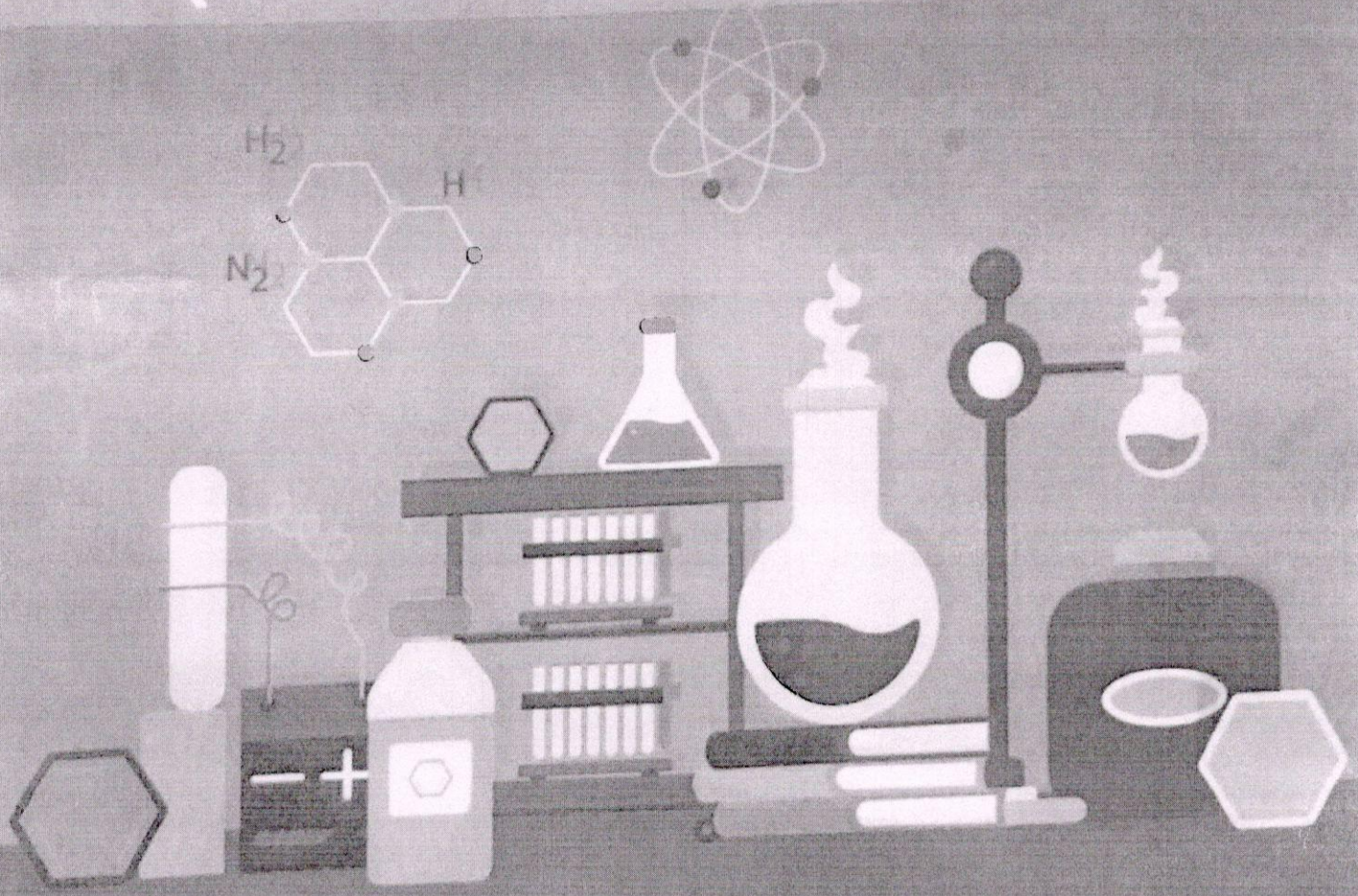

Dr. Nidhi Srivastava | Dr. Anoop Singh

Dr. Kamlesh Kumar

Dr. Nidhi Srivastava is an Associate Professor and Head of the Department of Chemistry in P.P.N College Kanpur, affiliated with CSJM University, Kanpur. She obtained her graduation, post-graduation and D.Phil. degree from the University of Allahabad, Allahabad. She qualified MP (SLET)-2000 and JRF (NET)-2001. and also worked as SRF (CSIR) for two years.

She has a teaching experience in UG and PG classes for the last 22 years. Her field of research mainly includes the isolation of natural products their identification characterization and screening effect. Dr. Nidhi Srivastava has participated and delivered lectures at various seminars and conferences. She has published several papers in reputed journals and is also a member of many professional societies and also written many books' chapters.

Dr. Anoop Kumar Singh is an Assistant Professor in the Department of Chemistry in R.R.P.G. College, Amethi, (U.P.) i.e. an "A" grade accredited by NAAC and CPE awarded institution of northern India. He has 13 years teaching experience in academic and research field. He is Ph.D. in Chemistry from V.B.S. Purvanchal University, Jaunpur (U.P.) and completed his M.Phil. degree from Chaudhari Devi Lal University Sirsa, Haryana. He has completed his Post Graduation from Dr. Ram Manohar Lohiya Awadh University, Ayodhya, (U.P.), B.Ed. from C.S.J.M. University Kanpur, U.P. and PGDCA from Punjab Technical University Jalandhar, Punjab. He has published a number of research papers in the recognised National and International Journals. He has also attended a number of National and International Seminars/Conferences/ Workshops and Faculty Development Programs and presented his research papers respectively. He has also written the Book chapter for the NEP-2020.

Dr. Kamlesh Kumar is an Assistant Professor in the department of Chemistry in K.B.P.G. College Mirzapur (U.P.). He is Ph.D. in Chemistry from A.P.S. University Rewa (M.P.) and completed the M.Phil degree from CDLU Sirsa (Haryana). He also completed Master of Education and Master of Library Science. He published a number of papers in various reputated National and International journals. He also attended and presented the paper in several international conferences and seminar. He participated in GIAN short term and attended the workshop organized by Bhabha Atomic Research Centre. He has also written various book chapters.

Aman Prakashan
(Publishers & Distributors)
104-A/80 C, Rambagh, Kanpur-208012 (U.P.)
Mob No. 8090453647, 7518424062
Email-Id : amanprakashanknp@gmail.com Website : www.amanprakashan.com

ISBN 978-93-95107-02-0

As per National Education Policy-2020

Preparation of ousehold Cleaning gents & Disinfectants

Dr. Nidhi Srivastava | Dr. Sudha Agarwal
Dr. Meet Kamal

for All UG Courses

Volume-I

Vocational Course

English
+
हिन्दी

Dr. Nidhi Srivastava is a Professor and Head of the Department of Chemistry in P.P.N College Kanpur, affiliated with CSJM University, Kanpur. She obtained her graduation, post graduation and D.Phil. degree from the University of Allahabad, Allahabad. She qualified MP (SLET) and JRF (NET) and also worked as SRF (CSIR) for two years.

She has a teaching experience in UG and PG classes for the last 22 years. Her field of research mainly includes the isolation of natural products their identification characterization and screening effect. Dr. Nidhi Srivastava has participated and delivered lectures at various seminars and conferences. She has published several papers in reputed journals and is also a member of many professional societies and also written many books' chapters.

Dr. Sudha Agarwal - After a brilliant academic career, she has been teaching both at undergraduate and postgraduate level in the department of Chemistry PPN College, Kanpur which is a renowned college of learning. Dr Sudha did her research work from Harcourt Butler Technological University. Her Research interest lies in Curing and Rheological behaviour of Vinyl ester resin on which she has a number of publications.

Dr. Meet Kamal Ph.D. from HBTU, Kanpur. She is presently working as Professor in the department of Chemistry, Christ Church College, Kanpur (U.P.) with teaching experience of more than 20 years. She has more than 40 papers in various journals of International repute and author of various books on Nanoparticles, Biological role of Calcium and many more. As a convener and coordinator of various National and International conferences organized at academic platform for imparting knowledge to mankind. A very active member of various national and International Organization like Association of Chemistry teachers, Vigyan Bharti, Affiliate member of of IUPAC and many more. Her main objective is to educate students and advance their knowledge by her small consistent efforts.

A.P. | **Aman Prakashan**
(Publishers & Distributors)
104-A/80 C, Rambagh, Kanpur-208012 (U.P.)
Mob No. 8090453647, 7518424062
Email-Id : amanprakashanknp@gmail.com Website : www.amanprakashan.com
ISBN : 978-93-95107-13-6

As per National Education Policy-2020

Preparation of Household Cleaning Agents & Disinfectants

Dr. Nidhi Srivastava | Dr. Sudha Agarwal
Dr. Meet Kamal

for All UG Courses

Volume-II

Vocational Course

English + हिन्दी

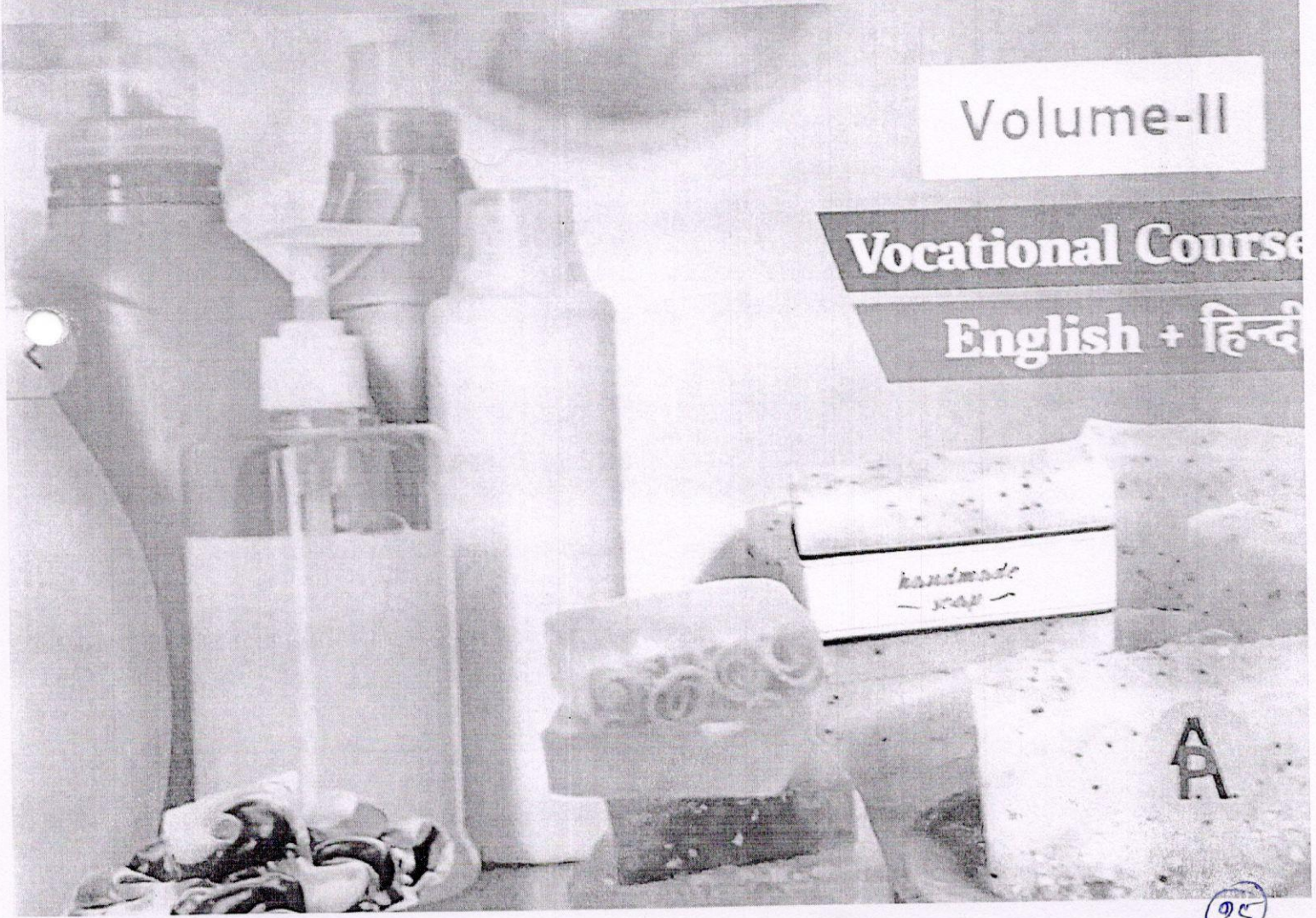

भारतीय दर्शन

अद्भुत चिंतन तत्व

डॉ.सुगन्धा जैन

नाम : डॉ. सुगन्धा जैन
पुत्री : श्री नरेश कुमार गुप्ता एवं स्वर्गीय श्रीमती अंजू गुप्ता
पत्नी : श्रीयुत विवेक जैन
संतानें : श्रेयांश जैन एवं नित्यांशी जैन
शिक्षा : एम0ए0. संस्कृत, हिंदी एवं पीएच.डी. संस्कृत

परब्रह्म परमात्म शक्ति की कृपा से आप्लावित डॉ0 सुगन्धा जैन के जीवन की उपलब्धि का सार गुरु कृपा है। गुरु कृपा से सुरभित संस्कृत वांग्मय समीक्षा, समालोचना, लेखन एवं संपादन कला में प्रवीण उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद नगर में सम्मानित जीवन यापन करने वाली डॉ0 सुगन्धा जैन तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद में फैकल्टी ऑफ एजुकेशन में असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत के पद पर कार्यरत हैं। आपने संगीत गायन एवं वादन में भी प्रभाकर की शिक्षा उत्तीर्ण की है इसी के साथ-साथ आप अनेक कलाओं लेखन, नृत्य, पाककला, साज-सज्जा आदि की भी प्रेमी हैं। आप अध्यात्म से जुड़े रहने के कारण शास्त्र स्वाध्याय में भी निरत रहती हैं। आप शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर 17 वर्षों से कार्यरत हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न वेबीनार, सेमिनार, कार्यशाला में प्रतिभाग किया है तथा राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बेवीनार, गेस्ट लेक्चर तथा कार्यशाला का आयोजन भी किया है। लेखन के क्षेत्र में 'संस्कृत साहित्य चिन्तामणि' टी.जी.टी,पी.जी.टी. प्रतियोगी पुस्तक का लेखन भी किया है तथा 'हिन्दी साहित्य चिन्तामणि' पुस्तक पर सहयोग प्रदान किया है। संपादन के क्षेत्र में 'वैश्विक विचारधाराओं का मूल : भारतीय ज्ञान परंपराएं', 'वैश्विक चिंतन एवं भारतीय ज्ञान परंपराएं', 'भारतीय ज्ञान परंपराओं का वैश्विक दृष्टिकोण', 'यथार्थ के धरातल पर मानवीय विचारधाराएं', 'नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा के विभिन्न आयाम', न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 : डिफरेंट डाइमेंशंस ऑफ एजुकेशन आदि पुस्तकों का संपादन भी किया है।

आप यूनिवर्स जनरल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमैनिटीज में ऐडिटोरियल बोर्ड मेंबर भी हैं। प्रकाशन के क्षेत्र में आपके अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो चुका है। वर्तमान में भी आप अनेक प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ी हुई है तथा छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। आपके प्रतिष्ठित जीवन की ईश्वर से हार्दिक अभिलाषा करते हैं।

मूल्य : १२००.०० रुपये

ISBN 978-93-92611-82-7

9 789392 611827

जे.टी.एस. पब्लिकेशन
बी-508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो. 08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com
ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश, पिन -201102

१५. भारतीय दर्शन का मूल १८४
डॉ. मीतू सिन्हा
१६. दर्शन का आदि स्वरुप एवं दिशाएं १९०
डॉ. नवनीत कुमार मौर्या
१७. बौद्ध दर्शन और बुद्ध देव २००
डॉ. संदीप कुमार
१८. भारतीय दर्शन एक परिचय २०७
डॉ. अरुणिमा
१९. भारतीय दर्शन का मूल २१३
डॉ. आरती शर्मा
२०. अद्वैतवेदान्तदर्शने सृष्टिविचारः २१९
डॉ.दु.फणियज्ञेश्वरयाजुलु
२१. सांख्य धरातल पर तत्व ज्ञान एवं मोक्ष २२७
डॉ. मोहनी दुबे
२२. जैनदर्शन में तत्त्व-चिंतन २३५
डॉ. रश्मि बी.वी
२३. योगदर्शन में यम-नियम की अवधारणा एवं उपादेयता २४६
डॉ. अभिमन्यु सिंह
२४. आर्य सत्य तथा उनमें निहित सौंदर्य बौद्ध मत में द्वादश निदान २५५
डॉ. रिज़वाना एवं पूर्णिमा तिवारी
२५. सांख्य में त्रिविध दुख २६२
डॉ० ध्रुव कुमार
२६. आत्मोन्नति में बौद्ध दर्शन एवं मानवतावादी मनोविज्ञान की भूमिका २७०
डॉ० रश्मि मिश्रा
२७. भारतीय दर्शनों का लक्ष्य २८८
अमर कुमार चौधरी
२८. जैन दर्शन में सत्य का स्वरुप २८३
ललित मिश्रा
२९. बौद्ध दर्शन और बुद्ध देव २९०
वर्षा तिवारी

आर्य सत्य तथा उनमें निहित सौंदर्य बौद्ध मत में द्वादश निदान

डॉ. रिज़वाना एवं पूर्णिमा तिवारी
(पी.पी.एन. पीजी कॉलेज)

शोध सारांशः– गौतम बुद्ध ने बोध प्राप्ति के उपरांत समाज को सत्य से अवगत कराने हेतु चार आर्य सत्य बताए हैं एवं उनकी व्याख्या भी की है। इन्हें चत्वारि आर्यसत्यानि कहा गया है। गौतम बुध की संपूर्ण अमूल्य शिक्षा का सार तत्व इन्हीं आर्य सत्यों को माना गया है। गौतम बुद्ध ने सदैव ही व्यवहारिकता पर बल दिया है, जो कि उनकी शिक्षाओं में झलकता है। यदि कभी कोई दार्शनिक अथवा सैद्धांतिक प्रश्न पूछा जाए तो उत्तर जानते हुए भी वे मौन हो जाया करते थे क्योंकि उससे लोगों के दुखों को खत्म करने में कोई सहायता नहीं मिलती, यह उनका मानना था ऐसे अनुत्तरित प्रश्नों को पाली भाषा में अव्यक्तानि कहा गया है। बुद्ध जी ने व्यावहारिक और सांसारिक दुखों से उबरने का मार्ग बताया है जिससे अष्टांगिक मार्ग कहा गया है। इसी की खोज वा दीक्षा में उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में भगवान बुद्ध द्वारा वर्णित चार आर्य सत्यों का विस्तृत वर्णन किया गया बुद्ध है।

शब्द कुंजीः–आर्य सत्य, सार तत्व, दुःख, अव्याक्तानि, अष्टांगिक मार्ग।

गौतम बुद्ध ने चार आग्र सतय रंखला में बताए हें सव्रप्रामि दुख का वण्रन हे उनहोंने यह समझाने का प्रयतन किया हे कि

आध्यात्मिक कल्पतरु :

श्रीमद्भगवद्गीता

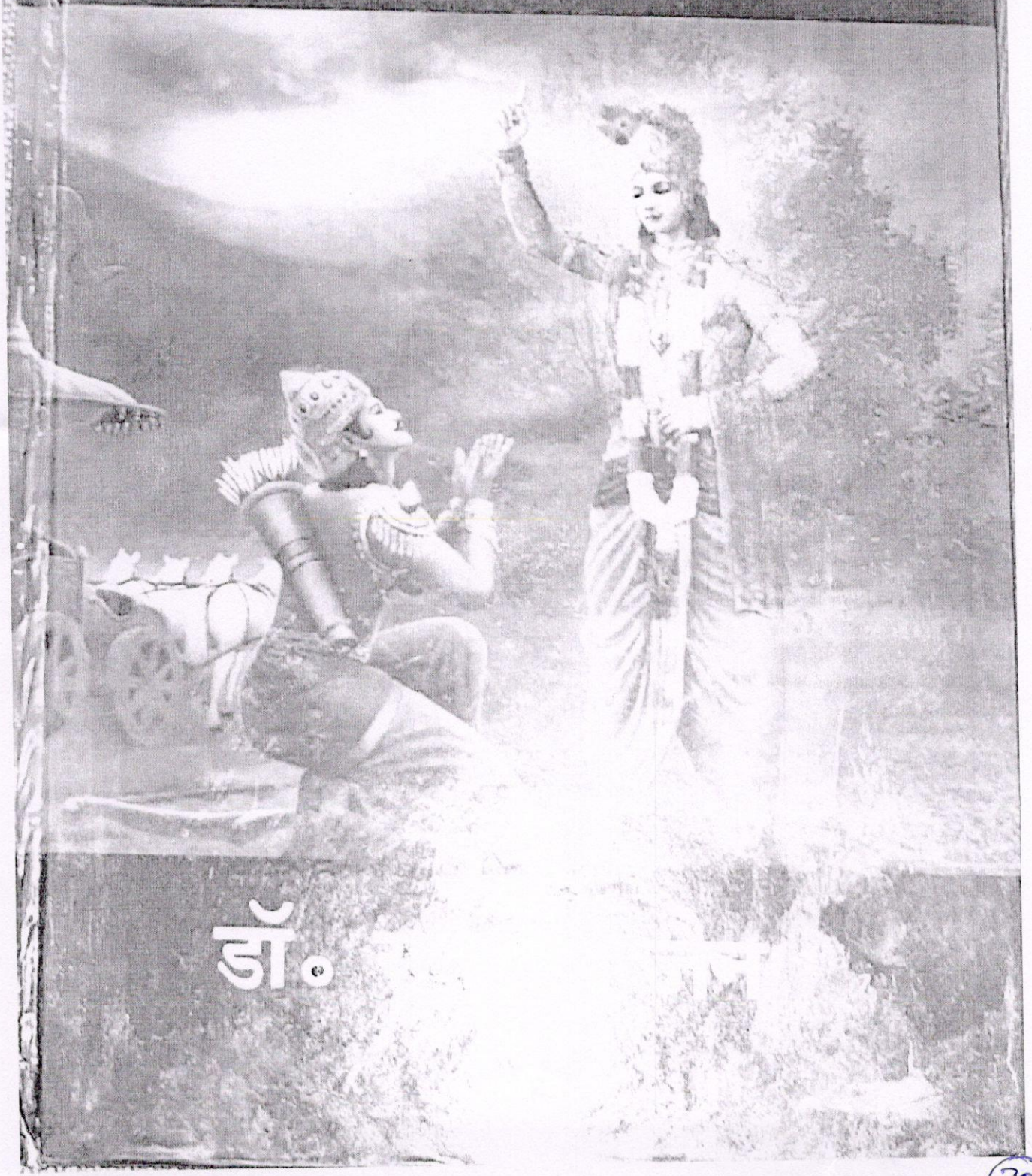

डॉ.

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

आध्यात्मिक कल्पतरु : श्रीमद्भगवद्गीता

सम्पादिका

डॉ० सुगन्धा जैन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२

ISBN 978-93-92611-65-0

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Aadhyaatmik Kalpataru: Shreemadbhagavadgeeta

Edited by Dr. Sugandha Jain

11. श्रीमद्भगवद्गीता में व्याप्त भगवान कृष्ण की शिक्षा : कर्म योग 92
आचार्य सलिन्द

12. आध्यात्मिक कल्पतरु : श्रीमद्भगवद्गीता निष्कर्म फल से मोक्ष - स्वरूपी सद्गति 97
डॉ. रश्मि बी. दी.

13. श्रीमद्भगवद्गीता मे योग 104
डॉ. अखिलेश्वर प्रसाद शुक्ल

14. श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित ज्ञानयोग की उपादेयता 112
डॉ. मीना गुप्ता

15. व्यवहारिक जीवन और वेदान्त कर्मयोगः (कर्मफलम् - आत्मसंयमः) 118
डॉ. रेणु कुमारी

16. श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग 123
डॉ० आलोक कुमार सिंह

17. संस्कृत वाङ्मय रत्न : श्रीमद्भगवद्गीता 131
जगदंबा प्रसाद

18. श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा की अवधारणा : जैन दर्शन के विशेष संदर्भ में 140
कन्हैया कुमार

19. श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग 148
लक्ष्मी बिष्ट

20. श्रीमद्भगवद्गीता का जनजीवन पर प्रभाव 153
कुमारी रश्मि

21. श्रीमद् भगवद्गीता में ब्रह्म-तत्व 158
जोसेफा टोप्पो

22. योगसाधने आहारस्य भूमिका 168
असित कुमार मण्डल

23. श्रीमद्भगवद्गीता में भक्तियोग 171
गगन कुमार मिश्र

14

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित ज्ञानयोग की उपादेयता

डॉ. मीना गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
पी.पी.एन कालेज कानपुर

सर्वशास्त्रमयी गीता- भारतीयों के सभी सर्वोच्च सिद्धांतो का प्रतिपादन श्रीमद्भगवद्गीता के सात सौ श्लोकों में किया गया है ।श्रीमद्भगवद्गीता पंचम वेद महाभारत के अंश भूत है श्री कृष्ण के द्वारा केवल उपदेश मात्र ही नहीं बल्कि भारतीय धर्म दर्शन की प्रतिनिधिरुप प्रस्थानत्रयी में विशेष स्थान प्राप्त है इसमें किसी जाति, धर्म ,वर्ग इत्यादि को लेकर के विषय वस्तु को प्रतिपादित नहीं किया गया बल्कि इसके विचार ,मान्यताएं, सिद्धांत दर्शन ,संपूर्ण मानव जाति के लिए उपादेय ही नहीं वरन् ईश्वर रुप में श्री कृष्ण के साथ मानव रूप अर्जुन का संवाद ब्रह्म साक्षात्कार रूप में ईश्वर और मनुष्य के मध्य साक्षात् संवाद की विलक्षण अभिव्यक्ति है । ज्ञान योग ईश्वर से संबंध स्थापित करने का आध्यात्मिक मार्ग है ज्ञान मार्ग के द्वारा जीव और ईश्वर का आत्मा और परमात्मा का संबंध हो सकता है यह संबंध परमात्मा से तादात्म्य या एकीकरण है। ज्ञानयोगी आत्म रूप को परमात्मा का स्वरूप समझता है वह परमात्मा से भिन्न नहीं है यही तादात्म्य भाव है। ज्ञान योगी के लिए सृष्टि ईश्वर मय है ईश्वर ही है सृष्टि और स्रष्टा में कोई भेद नहीं है जगत् परमात्मा का ही स्वरूप है परमात्मा से भिन्न किसी भी वस्तु की सत्ता नहीं है भेद मिथ्या दृष्टि है, अभेद यथार्थ दृष्टि है ।भेद देखने वाला अज्ञानी है और अभेद देखने वाला ही ज्ञानी है।

अनादि मत्परं ब्रह्म न सत्न्नासदुच्यते [1]

भारतीय दर्शन

अद्भुत चिंतन तत्व

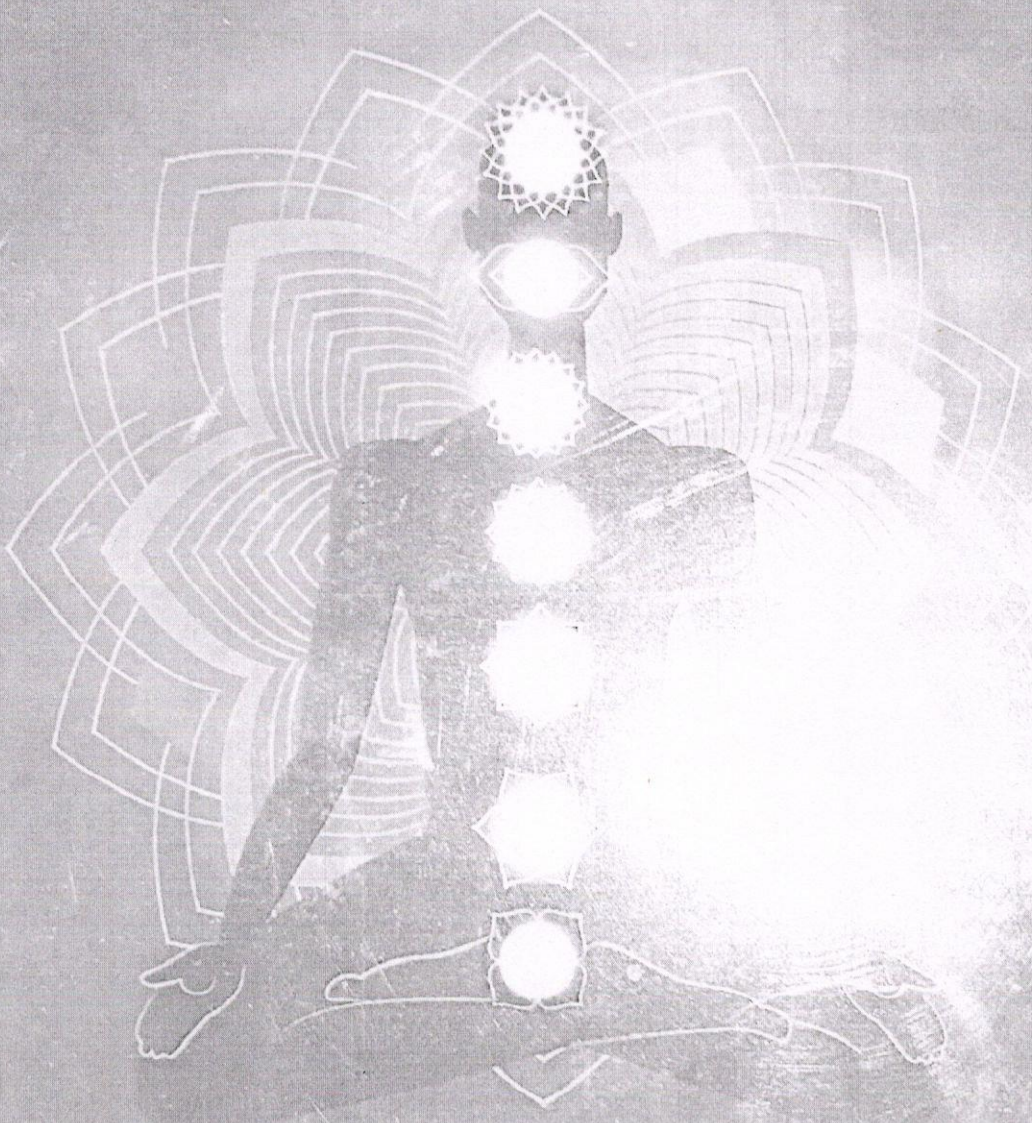

डॉ.सुगन्धा जैन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारतीय दर्शन : अद्भुत चिंतन तत्व

सम्पादिका
डॉ.सुगन्धा जैन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN978-93-92611-82-7

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : १२००.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय **कलम से**..... ७

१. वाल्मीकि रामायण में ऋषि परम्परा : एक अध्ययन १७
डॉ. डॉली जैन

२. पतंजलि प्रणीत योग दर्शन में ईश्वर का स्वरूप ४२
डॉ.मीना गुप्ता

३. पाणिनीय व्याकरण दृष्टया दर्शन ५०
डॉ. सुरेश पाण्डेय

४. भारतीय दर्शन में योग की अवधारणा ६४
डॉ. बिंदु सिंह

५. भारतीय दर्शन : अद्भुत चिंतन तत्त्व ६९
डॉ. राणी बापू लोखंडे

६. हिन्दी भक्ति साहित्य में राम-काव्य १००
रवीन्द्र कुमार

७. Overview of Charvaka Philosophy ११०
Pragati Jain

८. Historical Order of Indian Philosophy Literature : Brief Overview ११९
Dr. Ravindra Kumar

९. जैन धर्म के अद्भुत कला तत्व १२९
डॉ. पूर्णिमा वशिष्ठ

१०. वेदान्त दर्शन और सत्ता त्रय १३९
डॉ. हरिदेव कुमार

११. चार्वाक दर्शन में निहित वर्तमान सत्य १४७
डॉ. रवि कुमार

१२. भारतीय दर्शनों का लक्ष्य १५४
डॉ. सुनील कुमार

१३. भारतीय इतिहास में आदिवासी गोंड राजाओं की भूमिका १५९
डॉ. गौरी सिंह परते

१४. योग की ऐतिहासिकता एवं महत्व १७१
डॉ. यशवन्त यादव

2

पतंजलि प्रणीत योग दर्शन में ईश्वर का स्वरूप

डा.मीना गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत –विभाग
पी.पी.एन कॉलेज, कानपुर

योगशास्त्र में ईश्वर का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है।योग के विषय में महर्षि पतंजलि ने कहा है– योगश्चित्तवृत्ति निरोधः 1 अर्थात् चित्त की वृत्तियों को बाह्य विषयों में जाने से रोकना ही योग है। ईश्वर के विषय में ऐसा कहा गया है कि ईश्वरः ईशनशील इच्छामात्रेण सकल जगदुद्धरण क्षमः।2 अर्थात् समस्त जगत को केवल इच्छा मात्र से ही उत्पन्न और नष्ट करने में जो समर्थ है उसे ही हम ईश्वर की संज्ञा प्रदान करते हैं, ईश्वर नाम से जानते हैं । ईश्वर या उसके वाचक प्रणव के जप से तथा उसके अर्थ की भावना करने से चित्तमें एकाग्रता की स्थिति उत्पन्न होती है या चित्त एकाग्रता को प्राप्त करता है जिसके द्वारा क्रमशः चित्तवृत्तियों का निरोध होता है इसलिए ईश्वर के संबध में यह विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है ईश्वर के संबंध में विविध विद्वानों ने अपने विचार उपस्थापित किए हैं। भारतीय दर्शन में योग का अद्वितीय स्थान है।

सांख्य दर्शन और योग दर्शन समान तंत्र है सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष की मदद से विश्व की व्याख्या को बताता है सांख्य दर्शन निरीश्वर वादी दर्शन है इसमें ईश्वर के महत्त्व का प्रतिपादन नहीं किया गया है किंतु इसके विपरीत योग दर्शन सांख्य के विकासवाद का समर्थन करने वाला दर्शन है और वह

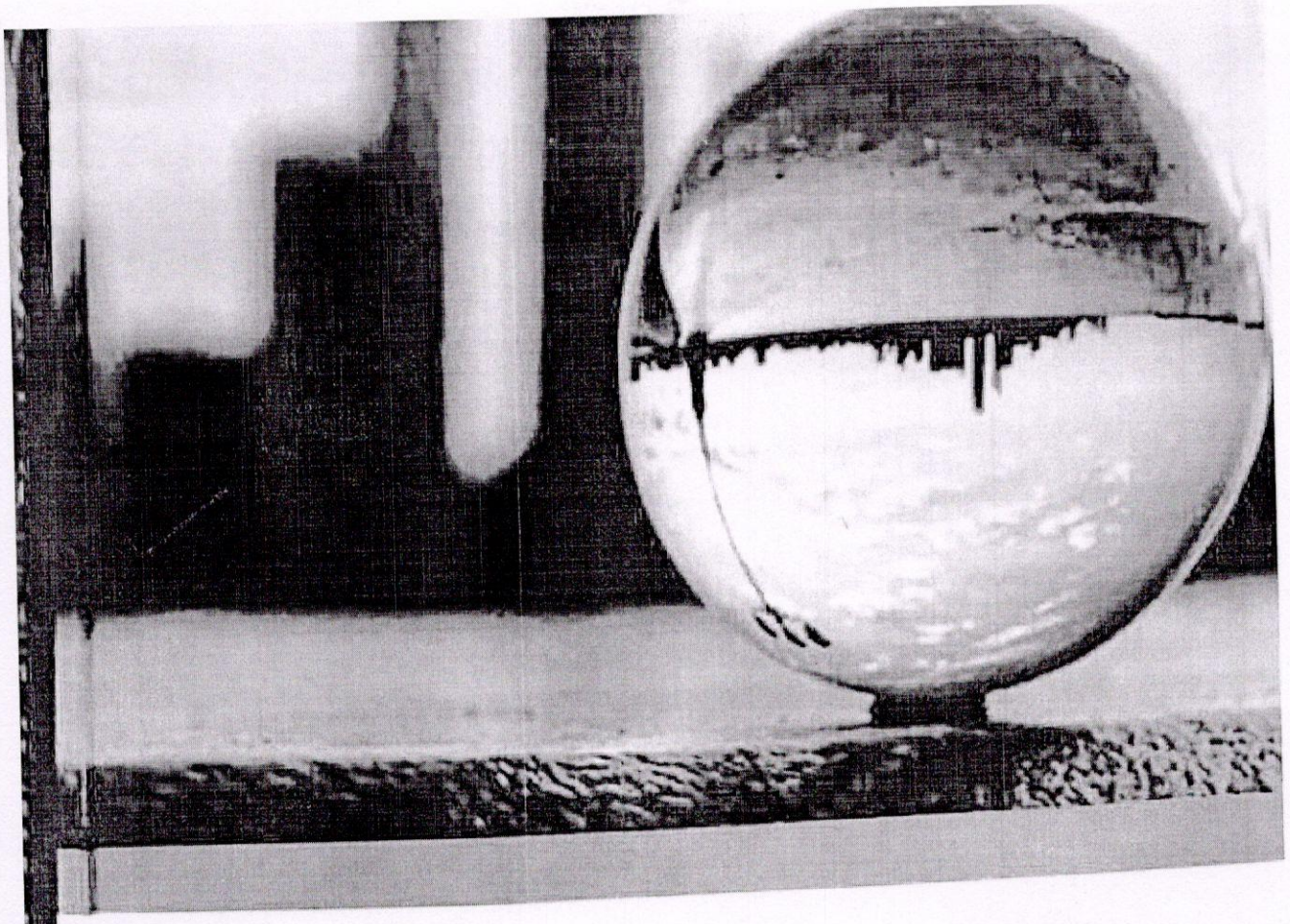

Paradigm Shift in the Sphere of

COMMERCE MANAGEMENT AND ECONOMICS

Dr Vibhuti Shivam Dube
Dr Ram Singh, Dr Pooja Aggarwal

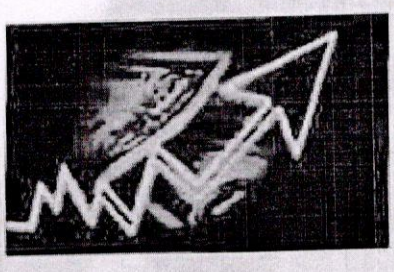
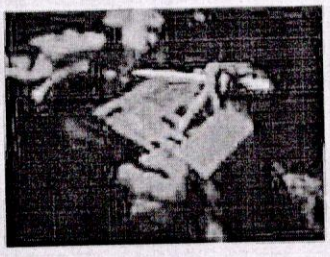
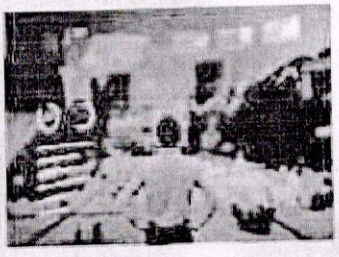

(36)

Paradigm Shift in the Sphere of Commerce, Management and Economics

Edited By

Dr. Vibhuti Shivam Dube
Assistant Professor
School of Management
Babu Banarasi Das University,
Lucknow, Uttar Pradesh-226028, India

Dr. Ram Singh
Assistant Professor
Department of Business Administration
University of Lucknow, Lucknow,
Uttar Pradesh-226007, India

Dr. Pooja Aggarwal
Associate Professor
School of Management
Babu Banarasi Das University,
Lucknow, Uttar Pradesh-226028, India

SHIVALIK PRAKASHAN
Delhi Bharat

39

8. Changing Pattern of Global Consumer Demand & Export Earnings of Indian Leather Industry 116
(Dr.) Vandana Dwivedi & Haya Khalid Hashmi

9. Role of HRM towards Corporate Social Responsibility and in Making of Sustainable Organisation 133
Mrs. Nisha Khan

10. Role of Innovation Capability in the Profitability of SMEs 150
Dr. Saurabh Singh & Dr. Madhu Dixit

11. Evolution of MSMEs in Strengthening Indian Economy 165
Ms. Pooja Prasad

12. Delegation of Philanthropic Responsibilities to Private Companies: A Study on Regulatory Policy to Sustainability Reporting Practices in India 179
Tirtha Sarathi Mohapatra

13. A Study on Paradigm Shift in the Sphere of Financial Inclusion and Financial Education 193
Ummey Aiman

14. Changing Paradigms of Business Communication 211
Dr. Saiyid Saif Abbas Abidi

15. The Growth of E-Commerce Industry in India: An Analysis of the Current Scenario 224
Ms. Snigdha

16. Work-Life Balance of Women in the Private Banking Sector 242
Diksha Gupta

90

8

Changing Pattern of Global Consumer Demand & Export Earnings of Indian Leather Industry

(Dr.) Vandana Dwivedi* & Haya Khalid Hashmi**

Abstract

This paper investigates the reasons for changes in consumer behaviour around the world and the impact these changes are having on export earning of the country from a particular industrial sector. This paper uses content analysis method for understanding the current circumstances to have a tentative idea about the corresponding impact it shall have on the export earnings from leather industry. An overview of the consumer demand of leather goods is taken at first, where it is accessed geographically which countries have increasing consumer demand for leather goods and which countries have declining demand for leather goods. As the study is centric to Indian demand trends so an evaluation is made on the current scenario of consumer demand post pandemic shocks and a tentative idea for the future trends is also made. The paper is concluded with suggestions and conclusions based of self-evaluation. The research methodology is descriptive and analytical in nature.

Key Words: *Consumer Behaviour, Demand, Supply, Investment, Essential and Non-essential commodities, COVID-19, Pandemic, Indian economy, Export earnings, Indian leather industry.*

* Associate Professor, Department of Economics , Pandit Prithi Nath (PPN) College Kanpur, Uttar Pradesh-208001

** Ph.D. Research Scholar, Chatrapati Shahu Ji Maharaj University (CSJMU), Kanpur, Uttar Pradesh-208012

Introduction

Leather has its origin and base from over a long period of time. As per Mordor intelligence (which is a research based market analyst organisation) global leather goods market is expected to grow at a CAGR of 6.2% during the period of 2022-2027 (Figure 1). One of the major reasons for this projection of coming future growth trend is the popularity of "leather goods in terms of growing demand for fashionable handbags, premium leather wallets etc because of leather's inherent qualities of being dustproof, fireproof, crack-proof and longer durability." With the rise in disposable income in the hands of public, the demand for luxury goods, which includes premium quality leather goods are also increasing, as owning a premium quality leather products generates a sense of accomplishment within public by giving them higher self- esteem. Leather goods form a major part of luxury goods. European countries are emerging as largest consumer demand base for leather goods because of the following reasons:

- Technologically advanced countries with strong social media presence and awareness.
- Increasing fashion consciousness. For example, France is world famous for its fashion consciousness.

भारतीय दर्शन

अद्भुत चिंतन तत्व

डॉ. सुगन्धा जैन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारतीय दर्शन : अद्‌भुत चिंतन तत्व

सम्पादिका
डॉ.सुगन्धा जैन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२
ISBN978-93-92611-82-7

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : १२००.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

१५. भारतीय दर्शन का मूल १८४
डॉ. मीतू सिन्हा
१६. दर्शन का आदि स्वरुप एवं दिशाएं १९०
डॉ. नवनीत कुमार मौर्या
१७. बौद्ध दर्शन और बुद्ध देव २००
डॉ. संदीप कुमार
१८. भारतीय दर्शन एक परिचय २०७
डॉ. अरुणिमा
१९. भारतीय दर्शन का मूल २१३
डॉ. आरती शर्मा
२०. अद्वैतवेदान्तदर्शने सृष्टिविचारः २१९
डॉ.दु.फणियज्ञेश्वरयाजुलु
२१. सांख्य धरातल पर तत्व ज्ञान एवं मोक्ष २२७
डॉ. मोहनी दुबे
२२. जैनदर्शन में तत्त्व-चिंतन २३५
डॉ. रश्मि वी.वी
२३. योगदर्शन में यम-नियम की अवधारणा एवं उपादेयता २४६
डॉ. अभिमन्यु सिंह
२४. आर्य सत्य तथा उनमें निहित सौंदर्य बौद्ध मत में द्वादश निदान २५५
डॉ. रिज़वाना एवं पूर्णिमा तिवारी
२५. सांख्य में त्रिविध दुख २६२
डॉ० ध्रुव कुमार
२६. आत्मोन्नति में बौद्ध दर्शन एवं मानवतावादी मनोविज्ञान की भूमिका २७०
डॉ० रश्मि मिश्रा
२७. भारतीय दर्शनों का लक्ष्य २८८
अमर कुमार चौधरी
२८. जैन दर्शन में सत्य का स्वरुप २८३
ललित मिश्रा
२९. बौद्ध दर्शन और बुद्ध देव २९०
वर्षा तिवारी

26

आत्मोन्नति में बौद्ध दर्शन एवं मानवतावादी मनोविज्ञान की भूमिका

डॉ. रश्मि मिश्रा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग,
पी.पी.एन. कॉलेज, कानपुर।

सार

खुशियाँ बाह्य जगत या भौतिकवाद में नहीं हैं, बल्कि स्वयं में अन्तर्निहित हैं। बौद्ध दर्शन उन अन्तर्निहित शक्तियों के उत्थान से सम्बन्धित है। हम जीतें या हारें यह हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। बौद्ध धर्म जीवन की दस अवस्थाओं के बारे में बताता है। जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षण में महसूस होती हैं। ये दस अवस्थायें नर्क, भूख, पशुत्व, क्रोध, शान्ति, उत्साह, सीखना, एहसास, बोद्धिसत्व तथा बुद्धत्व है। बौद्ध धर्म के मूलभूत पहलू विश्वास, अभ्यास और अध्ययन हैं। इनके माध्ययम से व्यक्ति अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं को जाग्रत करके बुद्धत्व को प्राप्त कर सकता है। मानवतावादी मनोविज्ञान भी व्यक्ति के बाह्य कारकों की तुलना में व्यक्तिगत मूल्यों, आत्म निर्देश तथा व्यक्तिगतवर्धन मानवीय एवं आन्तरिक कारकों पर अधिक बल देता है। अब्राहम मोस्लो ने इस सन्दर्भ में पदानुक्रमिक मॉडल को बताया है। आत्म सिद्धि से तात्पर्य आत्मोन्नति की एक ऐसी अवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं से पूर्ण रूप से अवगत होता है तथा अन्तः क्षमताओं के अनुरूप अपने आप को विकसित करता है। मानवतावादी मनोविज्ञान जीवन का अन्तिम लक्ष्य निरन्तर आत्म सुधार को मानता है।

संकेत शब्द– आत्मोन्नति, बौद्धधर्म, मानवतावादी मनोविज्ञान, बौद्धधर्म में वर्णित दस अवस्थाऐं, पदानुक्रमिक मॉडल।

आत्मोन्नति अर्थात् स्वयं का विकास करना। आत्म विश्लेषण के बिना मानव यंत्रवत जीवन जीता है। यह जीवन पर स्वामित्व की कुंजी है अर्थात आत्मानुभूति दृढ़ विश्वास को अनुभव में बदल देती है। ज्ञान एवं इच्छा शरीर एवं मन को नियंत्रित

Emerging Trends in Science and Technology

(Concepts and Applications)

Editors
Prof. I. R. Siddiqui, Prof. S.I. Rizvi
Dr. Vishal Srivastava & Dr. Pravin K. Singh

2021

46

Chpt.	Topic/ Authors Name/ Address	Page No.
21	**Biosensor in Food Analysis** *Arun Kumar Gupta and Poonam Mishra* Department of Food Engineering and Technology, Tezpur University	183
22	**Oxidative Acetoxylationand Pyridinationof Polynuclear Aromatics at Platinum Plate Electrode** *Sanjeev Kumar and Rajesh Verma* Department of Chemistry, Iswar Saran PG College (University of Allahabad), Prayagraj - 211004, India	192
23	**Photochemistry: Beginnings and Enantioselective catalysis** *Shyam Babu Singh* Department of Chemistry, Government College Ramchandrapur, District- Balrampur Ramanujganj, Chhattisgarh.	200
24	**Applications, Advantages and Disadvantages of Ozone in Food Processing** *Vinti Singh and Monika Singh* Centre of Food Technology, University of Allahabad, Prayagraj–211002	206
25	**Disaster, Emergencies, It's Impact and Management** *Mala Kumari[1] and Shivendu Tripathi[2]* [1]Department of Chemistry, Satish Chandra College, Ballia U.P. [2]Department of Physics, Satish Chandra College, Ballia U.P	213
26	**Importance of Natural Products** *Priyanka Maurya* Department of Chemistry, University of Allahabad Prayagraj	225
27	**Polymer Nanocomposites** *Prakash Chandra* Department of Chemistry, Institute of Basic Science, Bundelkhand University, Jhansi 284128, U.P. India	229
28	**Graphene: A Wonder Material** *Sudha Agrawal and Nidhi Srivastava* Department of Chemistry, P.P.N. College, Kanpur	235
29	**A Comparative Study of Sustainable and Non Sustainable Energy Resources** *Deepa Chauhan* Department of Chemistry, M.S. College, Saharanpur (U.P.)	242

Emerging Trends in Science and Technology
Editors : Ibadur R. Siddiqui, Syed I. Rizvi,
Vishal Srivastava & Pravin K. Singh
ISBN : 978-81-949641-0-0
Editions : 2021

Chapter 28

Graphene: A Wonder Material

Sudha Agrawal and Nidhi Srivastava
Department of Chemistry, P.P.N. College, Kanpur
Email: sudchem.agrawal@gmail.com

Abstract: A recently discovered 2-D crystalline material made up of carbon atoms derived from graphite, an allotrope of carbon, is found to have a number of amazing properties- thinnest, strongest and best conducting material. Graphene has tremendous potential and has opened the door of numerous applications. This two dimensional material is now getting use in developing the new products as well as to enhance the properties of existing materials. This is a tailor made material can revolutionize the 21st century.

Key words: allotrope, graphene, two dimensional materials

Introduction:

Graphene is a one-atom-thick layer of carbon atoms arranged in a two dimensional hexagonal lattice.(1) A single layer of carbon atoms arranged in planar sheet forms the graphene. Several layers of graphene stacked on top of others form the graphite. So Graphene is the building-block of Graphite, a well known allotrope of carbon used in pencil tips. The separate layers of graphene in graphite are held together by van der waals forces, which can be overcome during exfoliation of graphene from graphite.

The graphene was discovered, isolated and characterized in 2004 by Andre Geim and Konstantin Novoselov(2) at the University of Manchester, who were awarded the Nobel Prize in Physics in 2010 for their research on this amazing two dimensional material. Graphene is a remarkable substance with a number of astonishing properties,- thinnest, lightest, strongest, best heat and electricity conducting material ever discovered. That makes it the "wonder material".

(98)

Future of Online Education in India

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Editor : **Dr. Arti Vishnoi**

49

Future of Online Education in India

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Editor
Dr. Arti Visnoi

Samata Prakashan
Kanpur

50

ISBN : 978-81-947189-1-8

Price : 795.00 (Seven Hundred Ninty Five Only)

Book Name:

Future of Online Education in India
भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Edited by :

Dr. Arti Visnoi

© Reserved

First Published : 2021

Typesetting :

Rudra Graphics

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers]

Published by

SAMATA PRAKASHAN

159/1 Ward No. 12, Bajrang Nagar, Rura,
Kanpur Dehat (U.P.) - 209 303
Mob. : 9450139012, 9936565601
Email - samataprakashanrura@gmail.com

PRINTED IN INDIA

Printed at Sarthak Printer, Kanpur.

Contents

1. FUTURE OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Dr. Arti Vishnoi 09

2. IMPACT OF ONLINE EDUCATION DURING COVID-19
Dr. C. Deniel 19

3. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
(Dr.) Vandana Dwivedi, Haya Khalid Hashmi 24

4. GLOBAL DEVELOPMENT OF A CHILD : CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION
Dr. Rashmi Mishra 37

5. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Dr. Arti Vishnoi, Akanksha Dwivedi 44

6. Online Teaching Learning : A Challenge in Rural India
Prafulkumar P. Vaidhya, Dr. Puneet Saxena 54

7. ONLINE TEACHING DURING COVID-19, 2020 ADVANTAGES AND DISADVANTAGE A COMPARATIVE STUDY
Dr. Chanchal Sharma 59

8. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Dr. Alka Asthana 65

9. E-LEARNING DURING COVID-19 PHASE : OPPORTUNITIES AND CHALLENGES
Dr. Sangeeta Chauhan 72

10. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Dr. Abha Shukla 82

11. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Dr. Anjana Srivastava 89

12. RECENT TREND OF ONLINE EDUCATION
Mr. Anchal Saxena 95

13. FUTURE OF EDUCATION IN THE ERA OF DATA SCIENCE & ARTIFICIAL INTELLIGENCE
Mrigendra Singh 108

14. ONLINE EDUCATION POLICIES AND PROGRAMMES OF THE GOVERNMENT
Sakreen Hasan 119

15. IMPACT ON COVID-19 ON ONLINE EDUCATION
Shashi Shekhar 129
16. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA
Ouseen Gautam 134
17. ऑनलाइन शिक्षा व ऑफलाइन शिक्षा में अन्तर
डॉ. मीना गुप्ता 141
18. भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य
डॉ. निधि कश्यप, अनुराधा पाण्डेय 145
19. प्रौद्योगिकी तथा ई–लर्निंग में युवाओं का भविष्य
डॉ. एम.आर. आगर, डॉ. हरिणी रानी आगर 152
20. लॉकडाउन एवं सोशल डिस्टेन्स में शिक्षा व्यवस्था
डॉ. शशि गुप्ता 159
21. ई–लर्निंग या प्रौद्योगिकीपरक शिक्षा
डॉ. आरती विश्नोई, शैलेश कुमार 163
22. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा के फायदे व नुकसान
डॉ. निधि श्रीवास्तव, डॉ. सुधा अग्रवाल 173
23. ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों पर प्रभाव
डॉ. (सुश्री) भावना कमाने 178
24. कोविड –19 महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की प्रासांगिकता एवं चुनौतियाँ
चन्द्रप्रभा 183
25. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की चुनौतियाँ
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद, प्रा. रघुनाथ नामदेव वाकले 187
26. भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व
डॉ. तुकाराम चाटे, डॉ. अरुण कुमार 193
27. ऑनलाइन शिक्षा एवं ई–कंटेंट का निर्माण
अनिल कुमार 199
28. शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका
डॉ. जयश्री किनारीवाल–कुमावत 213
29. ऑनलाइन पर निर्भरता समस्त कार्यप्रणालियों की हानि या लाभ
विकास मच्छिद्र परदेशी 217
30. शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन की उपयोगिता
सुधीर कुमार, सन्तोष कुमार शाहू 222
31. डिजिटल शिक्षा की प्रासांगिकता व चुनौतियां
लक्ष्मी देवी 227

22

वर्तमान परिपेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा के फायदे व नुकसान

*डॉ. निधि श्रीवास्तव **डॉ. सुधा अग्रवाल

कोविड–19 महामारी से आज पूरा विश्व त्रस्त है। आज विश्व में 8 करोड़ लोग इस महामारी के चपेट में आ चुके हैं। महामारी की सक्रियता निरंतर बढ़ रही है भविष्य में इसके रुकने की कोई संभावना भी नहीं दिख रही है। पूरे विश्व का सामान्य जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। व्यक्तियों का परस्पर मेल–जोल खत्म हो गया है। व्यक्ति अपने परिवार से दूर एकांतता में जीवन जीने के लिए मजबूर है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक गतिविधियाँ या तो बंद हैं या आंशिक रूप से संचालित हैं। दुनिया का भविष्य अधर में है। दुनियाभर की सरकारों के सामने अपने नागरिकों को बचाने की चुनौती के साथ–साथ अपने सामाजिक और आर्थिक ताने–बाने को फिर से सहेजने की चुनौती है।

शिक्षा किसी भी समाज की गतिशीलता, जीवंतता एवं तारतम्य को बनाये रखने का बुनियादी तत्व है। दुनिया का कोई भी समाज शिक्षा की अवहेलना नहीं कर सकता। कोविड–19 ने अपनी भयंकर संक्रामक प्रवृत्ति के कारण शैक्षणिक गतिविधियों को जरूर अवरुद्ध कर दिया था, किंतु शिक्षा की सार्थकता को पुनः बनाए रखने के लिए सरकार ने आधुनिक तकनीकियों का सहारा लेकर नए सिरे से प्रयास आरंभ किया जिससे की समाज में वर्तमान के प्रति जीवंतता एवं भविष्य के प्रति गतिशीलता जारी रहे।

शिक्षा की आधुनिक पद्धतियों में ऑनलाइन टीचिंग सर्वाधिक प्रचलित व्यवस्था है। ऑनलाइन टीचिंग जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि संपर्करहित इंटरनेट के प्रयोग से डिजिटल प्लेटफॉर्म कंप्यूटर, मोबाइल, टैबलेट द्वारा शिक्षा का आदान–प्रदान करना। इस प्रकार की व्यवस्था विश्व में विद्यमान थी लेकिन अपनी जटिलता, खर्चीली एवं सीमितता के कारण व्यापक प्रयोग में नहीं थी।

1

FUTURE OF ONLINE EDUCATION IN INDIA

Dr. Arti Vishnoi

Abstract

This paper highlights the significance of E-Learning in a modern education system and discusses its technical aspects, advantages, disadvantages; also the comparison with Instructor led online teaching with the old classroom teaching methods. Currently the concept of E-Learning is becoming very popular due to pandemic situation and as the numbers of internet users are increasing day by day, online methods of learning are become more popular and user friendly now. Faster internet bandwidth has helped in boosting the growth of E-Learning. Many institutions of higher education and universities are resorting to E-Learning and at the same time many companies are also investing in online learning platforms as they are seeing a huge opportunity in this space going forward. IGNOU, the world's largest Open University launched a 24*7 E-Learning satellite channel called **Gyan Darshan**. Online learning gives advantage of 24*7 and 365 days in a year access to learning resources as compared to class room sessions. E-Learning provides cost effective course content, which once developed could be easily used and modified for teaching and training purpose. It also provides freedom to students carrying heavy school bags and also save environment by stop cutting trees for the sake of making paper, pencil, and rubber. It's the future of education as it is interactive, interesting and entertaining way of learning.

Keywords

E-Learning, Online education, interactive learning, Teacher led training, Interactive Classrooms, Trends, Content Management System

5

CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA

*Dr. Arti Vishnoi **Akanksha Dwivedi

ABSTRACT

As we all know the current scenario around the world is COVID-19 pandemic situation, which has affected many systems including the academic system. One among the national priority is Children's Education, because the skipping classes for a protracted time may reflect students negatively and their interest could also be measured less on study.

It is the phase where every child is now going through the transformation of online classes and at the same time teachers also are contributing in many efforts to making comfortable study to the children. Within the last decade, there are very rapid technological changes within the field of education. Apart from changes within the education system in India, if methods of strategic study are adopted it can develop sustainable online education system. The technologies have greatly improved in online classes through YouTube channels and other tutorial systems. It's considered that online education has its own pros and cons, but in the situation of this pandemic, the study of well-powered technology will be reliable and at the same time it might protect children from being deprived of education.

In this paper, we have identified key factors which will boost online education in India via internet penetration, low cost of online education, ease of doing course, initiative by government; employer's recognition and bridging gap are the key factors which will be the reason to create opportunity to grow up the online education system.

21

ई-लर्निंग या प्रौद्योगिकीपरक शिक्षा

*डॉ. आरती विश्नोई
**शैलेश कुमार

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

पिछले तीन दशकों में जीवन के हर क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सेवाओं का काफी विस्तार हुआ है। शिक्षा क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। प्राचीन गुरूकुल तथा आश्रम की वाचिक परम्परा से होते हुए शिक्षा ने अनेक सोपान तय किये हैं। पिछली सदी के कमोवेश पारम्परिक श्यामपट्ट तथा खड़िया मिट्टी (चॉक) के दौर से गुजरते हुए 21वीं सदी के इस दूसरे दशक में पठन–पाठन का समूचा परिदृश्य बहुत बदल चुका है। आज की स्कूली शिक्षा नवयुगीन साधनों तथा युक्तियों से सुसज्जित होती जा रही है। साधारण ब्लैक बोर्ड की जगह स्मार्ट बोर्ड ने ले ली है तथा विविध प्रकार के मार्कर पेन ने चॉक का स्थान ले लिया है। इंगित करने के लिये इस्तेमाल होने वाली स्टिक का स्थान लेजर प्वाइंटर ने ले लिया है। स्लाइड प्रोजेक्टर तथा एलसीडी प्रोजेक्टर अब हर कक्षा की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे हैं।

शिक्षा एक ऐसा गुण है जो जीवन भर व्यक्ति के साथ रहता है लेकिन इस कोरोना महामारी ने दुनिया भर में इस गुण को पाने के साधनों को दो राहे पर लाकर खडा कर दिया है। विश्वभर में 96 करोड़ विद्यार्थी टकटकी लगाये शिक्षण संस्थानों की ओर देख रहे हैं कि इस चुनौती से पार पाने का रास्ता क्या निकलेगा। कोविड–19 के कारण लॉकडाउन ने सरकार को धर्म संकट में डाल दिया है। इस महामारी ने रहन–सहन, कामकाज और पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों में इस कदर बदलाव कर दिया है कि इसकी इंसान ने सपने में भी कल्पना नहीं की होगी। इसने लाखों विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिसरों से बाहर कर दिया है और शिक्षक घर की चाहरदीवारी में सिमटकर रह गये हैं। इसके कारण शिक्षक समुदाय शिक्षण और सिखाने की प्रक्रिया में निरन्तरता जारी रखने के लिये वैकल्पिक रास्ते तालशने पर मजबूर हो गया है। परिणामस्वरूप शिक्षा अब तेजी से ई–लर्निंग की ओर अग्रसर हो रही है।

10

CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA

Dr. Abha Shukla

Pencil and paper versus laser and screen. Online and offline teaching both present benefits and challenges to learning environments. With the trend towards online learning increasing, the looming question for the education industry is are traditional methods of teaching losing relevancy? Everyone assumes it is easier to teach online . After all, it is convenient, saves time and saves money. The progression of e-learning provides students and educators with terrific advantageous.

Advantages in online teaching rest in time, location, opportunity and accessibility. A classroom can be set up and managed from any location at any time.shortens the distance between the learner and teacher. more accessible with teachers being able to teach their subject matter across district.

There are better opportunities to address student needs through multiple channels of communication with stronger assessments be it in or outside of the online platform.Tracking progress, recording information, and pacing are all simplified yet effective and efficient.

While the traditional classroom equipment, teachers are challenged to be more creative and innovative in order to deliver lessons and capture students' attention.

On the downside, all the wonderful advantages can be wiped away with network failure—no network, no classroom.Teachers must work around the lost connections, stalled video feeds, and distorted microphone sounds. loss of in-person contact that is granted in the social climate of a physical classroom. This is especially relevant for

8

CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA

Dr. Alka Asthana

INTRODUCTION

The COVID-19 crisis has strained all major trades and businesses to reallocate their operations online– the Indian education sector is not an exception. Schools and higher educational institutions have been closed down to guard students and prevent contagion, as lockdowns are being imposed globally. Online education has a heap of problems in India with a slender scope of becoming accessible, keeping in consideration the proactiveness of the steps as well as the states involved. The transition to the online education system has has impacted more than 1.26 billion students across 191 countries, according to UNESCO. Solely in India, since PM Narendra Modi imposed a national lockdown on March 25; more than 320 million students have been affected by the school shutting down.

As a stop-gap resort to avoid any considerable interruption in academic calendars, governments worldwide have favored shifting to online learning. Therefore, e-learning is now being announced as the key to completely transform the education sector. Considering the multiple benefits of virtual learning, we cannot be indifferent to the massive digital, gender, and class divide in India. As a result, the advantages will only mount up to those who have approachability to technology, who can assimilate to it, and most prominently, who can afford it.

Amidst a pandemic, with such restricted admittance to learning, a few children could be left with the complex alternative of either

संस्कृत वाङ्मय :
डॉ० सुगन्धा जैन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

संस्कृत वाङ्मय : नारी चेतना

सम्पादिका

डॉ० सुगन्धा जैन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-92611-25-4

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Sanskrt Vaangmay : Naaree Chetana

Edited by Dr. Sugandha Jain

अनुक्रमणिका

शुभकामना सन्देश-डॉ. मथुरा दत्त जोशी 05
शुभकामना सन्देश-प्रो. महावीर अग्रवाल 06
शुभकामना सन्देश-प्रो. मदन मोहन झा 07
भूमिका -डॉ. घनश्याम भारती 08
सम्पादकीय -डॉ. सुगन्धा जैन 11

1. वैदिक साहित्य में नारी चिन्तन 17
   डॉ. सुरेश पाण्डेय
2. लौकिक संस्कृत-साहित्य में नारी-सौन्दर्य के विविध आयाम: एक विमर्श 25
   प्रो.विनोद कुमार गुप्त
3. इतिहास के आईने में स्त्री 40
   डॉ. यशवन्त यादव
4. आर्षकाव्य महाभारत में स्त्री विमर्श 54
   डॉ. मीना गुप्ता
5. नारी का इतिहास में महत्व 63
   डॉ मीतू सिन्हा
6. नारी स्वातन्त्र्य का प्रतीक: भारवि की द्रौपदी 71
   डॉ. डॉली जैन
7. सृष्टि की आधारशिला नारी सृष्टिकर्ता ब्रह्मा 79
   डॉ. रश्मि बी.वी.
8. आधुनिक भारत में नारी चेतना 82
   डॉ. गौरी सिंह परते
9. चित्रकला में नारी अंकन 91
   डॉ. पूर्णिमा वशिष्ठ
10. वैदिक साहित्य में नारी 98
    डॉ. बिन्दु सिंह

आर्षकाव्य महाभारत में स्त्री विमर्श

डा. मीना गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
संस्कृत- विभाग , पी.पी.एन कॉलेज ,कानपुर।

महाभारत के प्रणेता महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास हैं, जिनके वैदुष्य ज्ञान का दिव्य प्रकाश सहस्त्रों वर्षों से पुराण ,महाभारत और ब्रह्मसूत्र के रूप में संपूर्ण विश्व को अपने विशाल वांग्मय से अनुप्राणित कर रहा है । रामायण और महाभारत दोनों ही ऋषि प्रणीत होने से आर्ष काव्य हैं। यह हमारे प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति सभ्यता के महत्वपूर्ण उत्स एवं आकर ग्रंथ हैं। महाभारत में भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति के साथ -साथ धार्मिक, सामाजिक ,सांस्कृतिक, राजनैतिक व आर्थिक परंपराओं की प्रभूत राशि संकलित है। इसकी मान्यताएं शाश्वत चिरंतन एवं सर्वकालिक है [1] अर्थात् इनमें प्रतिपादित जीवन मूल्य केवल एक काल से संबद्ध न होकर आज के जीवन हेतु उतने ही प्रासंगिक एवं प्रमाणिक हैं जितने पहले थे ।

महत्वाद् भारवत्वाच्च महाभारतमुच्यते।

महाभारत आदि पर्व 1/274

महाभारत को अनेकों काव्यों, नाटकों का उपजीवी भी कहा गया है क्योंकि , इसकी मूल कथा व आख्यानों को आधार बनाकर परवर्ती संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रणयन हुआ है। आधुनिक रूप में महाभारत में अट्ठारह पर्व तथा 100000 श्लोक प्राप्त होते हैं , विषय की व्यापकता विशालता

17

ऑनलाइन शिक्षा व ऑफलाइन शिक्षा में अन्तर

डॉ. मीना गुप्ता

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सम्पूर्ण विश्व कोरोना नामक रेस्पेरेटरी डिजीज के संकट से ग्रस्त है इस बीमारी ने विश्व पटल पर अनेकानेक विकसित देशों को अपने जाल में आबद्ध कर रखा है और संचार के अनेकश: साधनों के कारण इस समस्या का भारत को भी सामना करना पड़ रहा है इसने सम्पूर्ण राष्ट्र को भयाक्रान्त कर रखा है सभी मनुष्यों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जैसे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक व शैक्षिक स्तर पर इस कोरोना का व्यापक असर हुआ है। इस काल में शिक्षा व्यवस्था के विशेष सन्दर्भ में हमें विशेष परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। सम्पूर्ण देश में इस काल में शिक्षा व्यवस्था-सुचारु रूप से चलती रहे इसके निमित्त कई महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य कदम उठाए गए हैं इसी क्रम में भारत में ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षा व्यवस्था हमारे लिए कितनी उपयोगी है दोनों में अन्तर को दृष्टिगत रखते हुए इसके दुष्परिणाम पर भी समीक्षात्मक रूप से अपने मंतव्य को उपस्थापित करूँगी।

जैसा कि हम सभी को ज्ञात है कि 24 मार्च 2020 को पूरे भारत में शैक्षिक संस्थानों को सत्र के मध्य में ही बिना अपनी परीक्षा कराए या सेमेस्टर के कोर्स को पूरा कराए बीच में ही अचानक से लॉकडाउन की घोषणा के साथ बन्द कर दिए गए और सम्प्रति सितम्बर मास तक लगातार ये संस्थान बन्द ही रहे किन्तु छात्रहित एवं समाजहित को ध्यान में रखकर इस काल में ऑनलाइन टीचिंग (शिक्षण) को विकल्प के रूप में विस्तारित किया गया इसी माध्यम से छात्र-छात्राओं की परीक्षा का भी आयोजन कराया जा रहा है विभिन्न कॉलेजों में Entrence Exam भी इसी माध्यम से हो रहे हैं जिसकी आज के सन्दर्भ में अत्यन्त ही आवश्यकता थी।

1. ऑनलाइन शिक्षण का आशय- ई-शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों इन्टरनेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो/वीडियो द्वारा, CD द्वारा, टेलीविजन द्वारा हम रोचक शैली में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। ई-शिक्षा के माध्यम से शिक्षक व छात्र एक-दूसरे से विचार व सूचना का आदान-प्रदान कर सकते हैं। यह शिक्षा विद्यार्थियों के लिए सुविधाजनक एवं समय के बंधन से रहित है।

7

ONLINE TEACHING DURING COVID-19, 2020 ADVANTAGES AND DISADVANTAGE A COMPARATIVE STUDY

Dr. Chanchal Sharma

ABSTRACT

Covid-19, 2020 affects different people in different ways. According to W.H.O. coronavirus disease (Covid-19) is an infactions disease. "Such kind of situation every body has already faced during 1347 which is known as "Black Death". During this Coronakal everybody has locked in their home. They are facing lot of problems in every part of life, like you have to stay at your home, wash you hand maintain social distancing etc.

In educational world the new rovoluation has come that is online teaching. Though digital world is not new for us every body knows it very well. But according to present situation though we knows the advantage and disadvantage both. This has become the need of our life. We have to accept it also.

Key words : Social, eaducation, disease, revolution, Digital etc.

Now a days we are learing under the shade of Covid-19, 2020. No body has seen such type of situation in their life. Everyone has become shocked from this situation created by Covid-19. It is a respiratary illness caused by a type of virus called coronavirus. It first discoursed in china. In India it comes into limelight when our prime

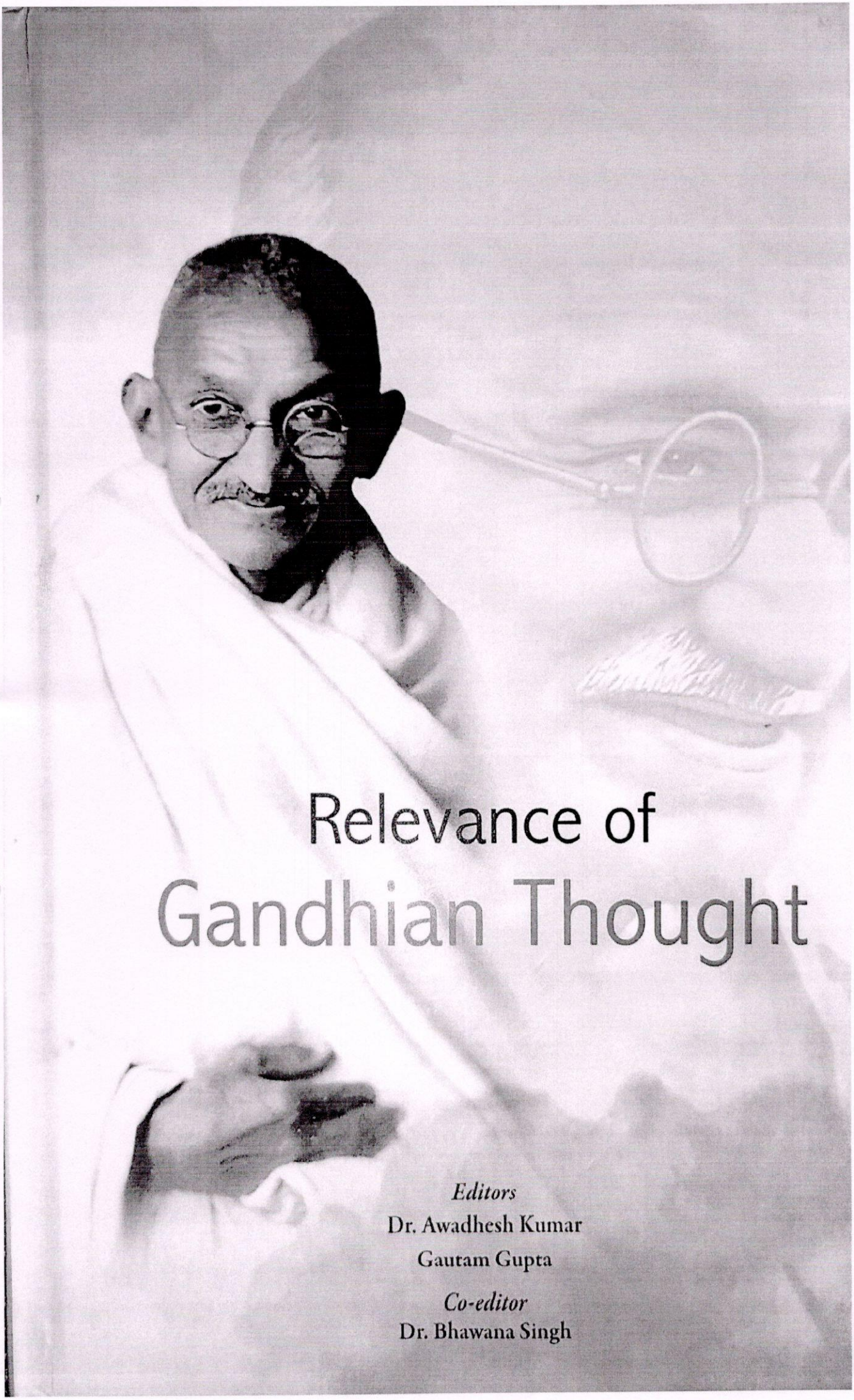

Relevance of Gandhian Thought

Editors
Dr. Awadhesh Kumar
Gautam Gupta

Co-editor
Dr. Bhawana Singh

Dr. Awadhesh Kumar M.A. (Modern History), D.Phil. from University of Allahabad is Presently posted as Assistant Professor in the department of History at Dr. Shyama Prasad Mukherjee Post Graduate Government College, Bhadohi

He has 16 years experience in Research and Teaching. More than 25 Research Papers and Articles have been published in various reputed National and International Journals and edited books. He has authored book entitled *The Relations of the East India Company with the Peripheral States (1772-1812 A.D.)*, and edited four books entitled *Told and Untold Facets of 1857*, *Contemporary Climatic Issues and Challenges*, *Status of Working Women In India* and *Bharat Me Karyasheel Striyon Ki Chunautiyan*

He has attended, participated and presented more than 30 research papers in many National and International Seminars/Conferences. He is a life time member of U.P. Government Degree Colleges Academic Society, Prayagraj and various other academic societies. He has active and sincere contribution in organizing 03 National Seminars (sponsored by Department of Higher Education, Government Of Uttar Pradesh), 01 online International Webinar, 02 National E-Workshops organized by Dr. Shyama Prasad Mukherjee Government Degree College , Bhadohi,(U.P.), India.

Gautam Gupta, M.A. (Sociology)(JNU), U.G.C. NET, JRF is working in the capacity of Assistant Professor (Sociology), Dr. Shyama Prasad Mukherjee Govt. Post Graduate College, Bhadohi, Uttar Pradesh. Mr. Gupta has 15 years of teaching experience. He has published several articles/papers in National/International journals of high repute. He has written several book chapters and edited a book named *Eco-centric Thought and Action: A Need for Human Existenc*. He has successfully organized Two National Seminar with five National Webinar and presented several papers in National and International Seminars/Conferences.

Dr. Bhawna Singh is M.Sc.(mathematics) D.Phil from Allahabad University is presently posted as Assistant Professor Department of Mathematics in Dr. Shyama Prasad Mukherjee Government Post Graduate College, Bhadohi UP India. She has published several articles/papers in National/ International Journal of high repute and written several book chapters. Dr. Singh is life members in National societies like Ramanujan mathematical society, Tiruchirappalli, The Allahabad Mathematical Society, Allahabad and Indian Mathematical Society, Pune. She is Secretary for Publication in Allahabad Mathematical Society. She has successfully organized two National and one International webinar as organising secretary and presented several papers in National and International Seminar Conferences.

AKHAND

AKHAND PUBLISHING HOUSE

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

www.akhandbooks.com

ISBN 978-93-90870-49-3

9 789390 870493

₹695

8. Gandhi's Views on Value Education: The New Vision for Contemporary Education System 87
—Amir Khan Ahmad

9. Gandhian Philosophy of Education 102
—Dr. Jyoti Pandey

10. Relevance of Gandhian Ideology for Growth and Sustainable Development 110
—Dr. Tarit Agrawal

11. हिंदी साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव 124
—डॉ० विद्या सागर सिंह

12. वैश्वीकरण के दौर में महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज की प्रासंगिकता 133
—डॉ0 बालकेश्वर

13. समकालीन परिदृश्य और महात्मा गांधी : एक समाजशास्त्रीय समझ 141
—डॉ0 रवि कुमार मिश्र, डॉ0 विनोद कुमार पाण्डेय

14. महात्मा गांधी का आर्थिक चिंतन — एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 155
—डॉ0 अरविन्द कुमार मिश्र

15. गांधी दर्शन तथा स्वास्थ्य के आयाम 166
—डॉ0 आभा सिंह, डॉ0 रितु मोदी

16. गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा : वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता 175
—राधा रानी सिंह

17. गाँधी दर्शन–ग्रामीण विकास के संदर्भ में 189
—डॉ0 अदिति गोस्वामी

15

गांधी दर्शन तथा स्वास्थ्य के आयाम

डॉ. आभा सिंह, डॉ. रितु मोदी

संक्षेप

गांधी जी का दर्शन स्वास्थ्य के संबंध में आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा स्वास्थ्य ही, हमारा वास्तविक धर्म है। व्यक्ति को प्रतिदिन अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए। योग एवं ध्यान के द्वारा हम स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रख सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति में उस राष्ट्र के लोगों का अच्छा स्वास्थ्य है, जिसके कारण वे लोग अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ देश की प्रगति में अनवरत योगदान करते हैं। देश के समग्र विकास के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी योग, ध्यान, प्राणायाम पर बल देते हैं। देश के विकास के लिए देशवासियों का स्वस्थ रहना प्रसन्न रहना अति आवश्यक है। गांधीजी का स्वास्थ्य के प्रति जो दृष्टिकोण था, उसकी आज के समय में सार्थकता के संबंध में प्रस्तुत लेख में व्याख्या की गई है।

'स्वास्थ्य ही हमारा वास्तविक धन है ना कि सोना एवं चांदी'

– महात्मा गांधी

अच्छा स्वास्थ्य ही धन है। स्वास्थ्य हजार नियामत है। स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य ही, स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व स्वास्थ्य को लेकर सजग है। ऐसे में जब सभी देश कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा हो उस समय भी गांधी जी का स्वास्थ्य के प्रति जो मंत्र दिया गया था वह आज की परिस्थितियों में भी पूरी तरीके से कारगर है। गांधी जी ने अपने वातावरण, अपने घर, समाज की स्वच्छता पर बल दिया था। स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य का मुख्य स्रोत है। आज के समय में हम सबको स्वस्थ रहने के लिए केवल व्यक्तिगत स्वच्छता ही नहीं अपितु अपने आसपास, समाज और समुदाय की स्वच्छता पर बल देने की आवश्यकता है। गांधी जी ने यह बात बहुत पहले ही स्पष्ट कर दी थी। आज ज्यादातर लोग एक अंधी दौड में शामिल है। भौतिकता के इस जंगल में उन्हें सिर्फ धन कमाने की होड लगी हुई है। लोग भूल ही गये हैं कि इस दुनिया में सबसे बडा धन, हमारा स्वास्थ्य है। यही कारण है, कि सामान्य व्यक्ति स्वास्थ्य का नजरअंदाज करके मात्र शानो–शौकत के जीवन को अपनाना चाहता है। स्वयं को एक बडी परेशानी में डाल देता है। जब व्यक्ति अपने सोने जागने, खाने और कार्य पर जाने के नियमों को अस्त–व्यस्त कर देता है, तो ऐसे में बीमारियां कब उसे घेर लेती हैं, यह पता भी नहीं चलता। आज के दौर में ज्यादातर लोग डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, हार्ट की बीमारी आदि समस्याओं से ग्रस्त हैं, जिसका मूल कारण है कि हमने पर्याप्त सैर, व्यायाम, ध्यान से अपनी दूरी बना ली है। ऐसे में जब तक हम डॉक्टर की सलाह के बाद जागते हैं, तब तक बहुत सी बीमारियां अपनी जडें, जमा चुकी होती हैं। यदि हम अपनी जीवनशैली को ठीक कर लेते हैं, तो धीरे–धीरे हमें बीमारियों से छुटकारा मिल जाता है और हम बहुत ही सुख और शांति से अपने जीवन को व्यतीत कर सकते हैं। गांधी जी ने भी देश को आजाद कराने के साथ–साथ भारतीयों को जीवन में स्वस्थ रहने के भी सूत्र प्रदान किए हैं। किसी भी बडे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति का स्वस्थ रहना अति आवश्यक है। जब हम स्वस्थ रहेंगे, तभी हम बडे से बडे लक्ष्य और खुशी को प्राप्त कर सकेंगे।

4

GLOBAL DEVELOPMENT OF A CHILD : CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION

Dr. Rashmi Mishra

The parents and teachers have to strike a balance between online and offline activities of their children. 21st century refers to a broad set of knowledge, skills, work habits and character traits that are believed by educationist, sociologist, psychologist, families and other agencies- to be critically important to success in today's world. This is a requirement of the changing era that an individual may face the challenges of the world that is globally active, digitally transforming, collaboratively moving forward, creatively progressing, and seeking competent human resource and quick in adopting changes. "Change is the only constant in life", change never comes easy but it always make oneself stronger and competent.

The family is the child's first and longest- lasting, context for development. Early childhood period is considered to be critical for the brain development and learning skills. Skills gained during these years have long term effect on individual's later life and achievements. The process of socialization starts from home then extend to peer and community. Parenting style contributes to the development and growth of children as a whole. A child's social and emotional growth depends on the child rearing practices of the parent. Barber & et.al. (1997) reveal three features that consistently differentiate an effective style from less effective ones- (1) Acceptance of the child and involvement in the child's life, which establish an emotional connection with the

Chapter

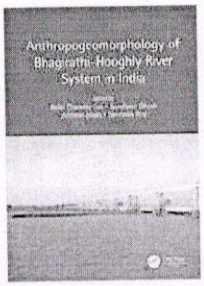

Detecting the Facets of Anthropogenic Interventions on the Palaeochannels of Saraswati and Jamuna

By Mehebub Sahana (/search?contributorName=Mehebub Sahana&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx), Mohd Rihan (/search?contributorName=Mohd Rihan&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx), Samrat Deb (/search?contributorName=Samrat Deb&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx), Priyank Pravin Patel (/search?contributorName=Priyank Pravin Patel&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx), Wani Suhail Ahmad (/search?contributorName=Wani Suhail Ahmad&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx), Kashif Imdad (/search?contributorName=Kashif Imdad&contributorRole=author&redirectFromPDP=true&context=ubx)

Book Anthropogeomorphology of Bhagirathi-Hooghly River System in India (https://www.taylorfrancis.com/books/mono/10.1201/9781003032373/anthropogeomorphology-bhagirathi-hooghly-river-system-india?refId=3e99757c-ed49-4a2a-b5c9-f06a8a9bbbaf&context=ubx)

Edition	1st Edition
First Published	2020
Imprint	CRC Press
Pages	21
eBook ISBN	9781003032373

Share

ABSTRACT

< Previous Chapter (chapters/edit/10.1201/9781003032373-13/anthropo-footprints-churni-river-biplab-sarkar-aznarul-islam-balai-chandra-das?context=ubx) Next Chapter > (chapters/edit/10.1201/9781003032373-15/facets-anthropogenic-encroachment-within-palaeo-fluvial-regime-kana%E2%80%93ghia%E2%80%93kunti-system-damodar-fan-region-arghyadip-sen-ujwal-deep-saha-arijit-majumder-nilanjana-biswas?context=ubx)

Journals

Corporate

Help & Contact

Connect with us

(https://www.linkedin.com/company/taylor-&-francis-group/) (https://twitter.com/tandfnewsroom?lang=en) (https://www.facebook.com/TaylorandFrancisGroup/) (https://www.youtube.com/user/TaylorandFra

Registered in England & Wales No. 3099067
5 Howick Place | London | SW1P 1WG

© 2023 Informa UK Limited

ADVANCES IN CHEMICAL AND APPLIED SCIENCES

VOL 3

Editors
Anil K. Shukla
Archana Pandey
Deepa Srivastava

CHEMICAL SOCIETY, C M P COLLEGE
2 M. G. MARG, GEORGE TOWN, ALLAHABAD - 211002 (U.P.) INDIA

74

Advances in Chemical and Applied Sciences - Vol 3
Editors : Anil K. Shukla, Archana Pandey, Deepa Srivastava
ISBN : 978-93-88018-19-7
Edition : 2020

Effects of Special Relativity on the Properties of Heavy Elements

Sudha Agarwal and Nidhi Srivastava*

Albert Einstein in his theory of special relativity determined that the laws of physics are the same for all non accelerating objects and he showed that the speed of light within a vacuum is the same no matter the speed at which an observer travels.

The Research findings of Hiedelberg's University[1] has confirmed that Einstein's theory of relativity does not play a crucial role in Astronomy and space travel with their huge distances but also emphasizes its significance in the world of electrons, atoms and molecules.

According to special relativity the apparent mass of an electron increases as its velocity approaches the speed of light. From Neils Bohr's theory of atomic structure the velocity of an electron is directly proportional to the atomic number of an element. For light elements like hydrogen the velocity is insignificant compared to speed of light therefore relativity can be completely ignored. But in case of heavy elements it becomes significant. Thus, relativistic effects are important only for heavier elements[2] with high atomic number.

Special Relativity causes some elements to behave out of character breaking the periodic law of chemical elements for example Gold owes its beautiful color and silver is white. Mercury is liquid at room temperature. Mercury is right next to gold yet their properties are utterly dissimilar. Thallium lead and Bismuth are stable in low oxidation states.

Special Relativity

We can think of the electron as a particle that is accelerated to a certain radial velocity by the attraction of the nucleus; as the nuclear charge builds up, this radial velocity builds up too. The radial velocity approaches the speed of light as the nuclear charge approaches Z=137.036. The average radial velocity of the 1s electrons of an atom is proportional to the ratio of the nuclear charge of

*Department of Chemistry, P.P.N College, Kanpur.
E-mail : nidhisrivastava2006@gmail.com

A comprehensive overview of the current developments in different areas of Medicinal chemistry is highlighted. The proceedings of the conference will provide a global platform from eminent academics, scientists, researchers, professionals and research scholars from all over the world to discuss emerging advances and concepts in all aspects of drugs, naturopathy treatment boosting immunity in the current scenario keeping in view the practical challenges and solutions adopted for the betterment of mankind.

Dr Devendra Awasthi is Head &Associate Professor in the department of chemistry at Sri N.M.P.G college Lucknow having an elaborate teaching experience of more than 30 years.
Dr Meetkamal Associate Professor in the Department of Chemistry, Christ Church PG College Kanpur having a teaching and research experience of more than 20 years.

978-620-2-68416-3

Awasthi, Kamal

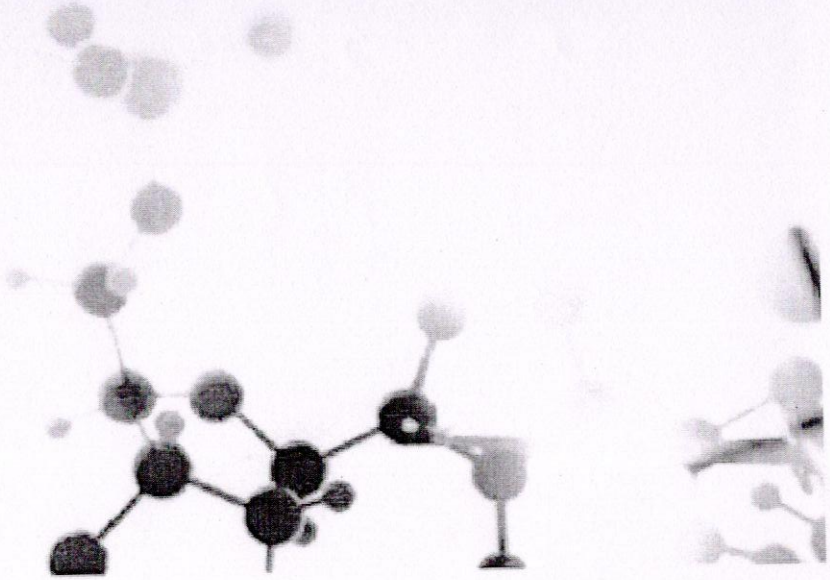

Devendra Awasthi
Meet Kamal

Role of Medicinal Chemistry in the Current Scenario

Proceedings of World conference 2020

LAP LAMBERT Academic Publishing

जनसंख्या पर्यावरण और स्वास्थ्य

डॉ. उमा कान्त सिंह
डॉ. संजय कुमार सिंह

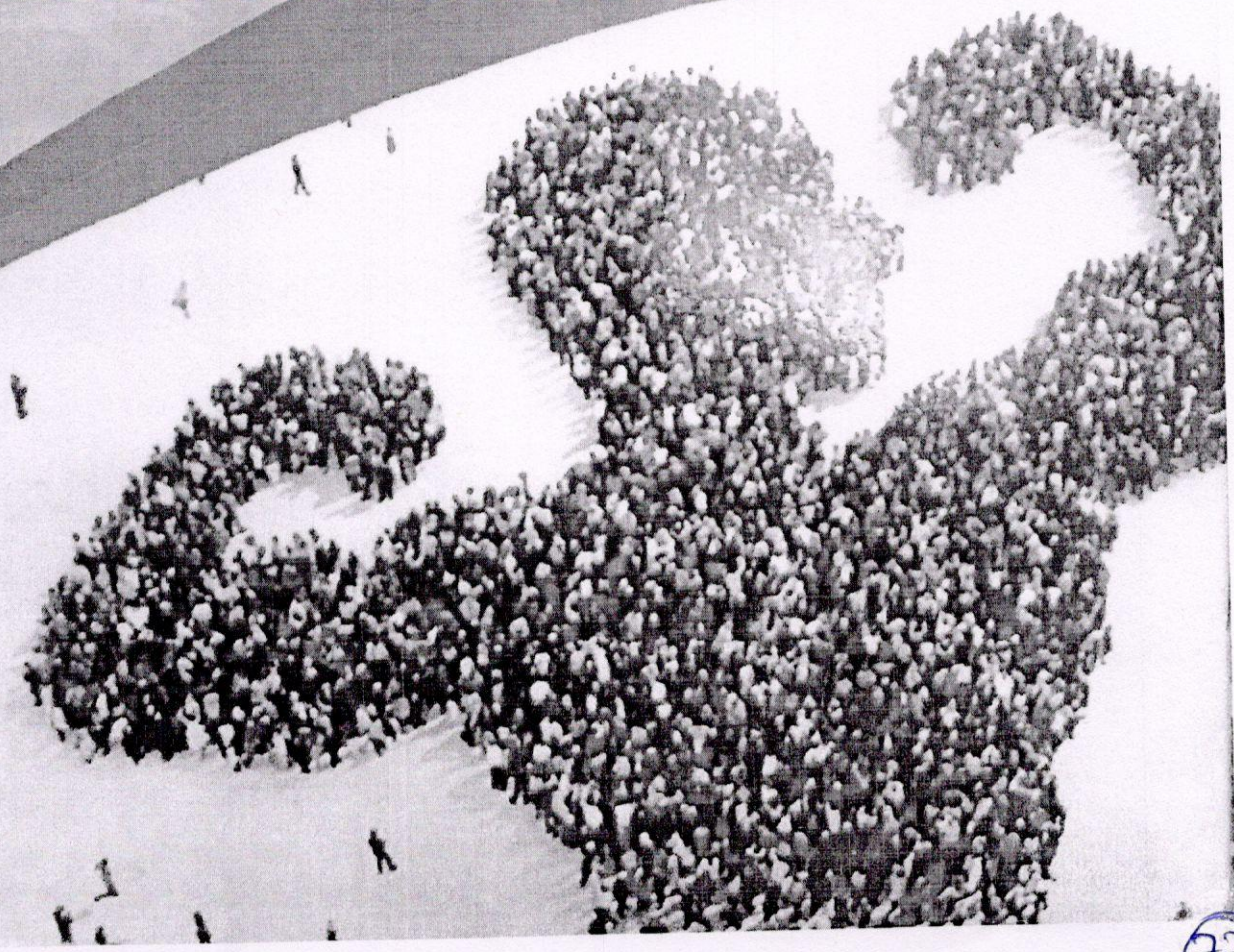

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित -प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक में लिखे गये लेख लेखक का अपना मत है, जिसका विधिक जिम्मेदारी उनकी खुद की है।

जनसंख्या, पर्यावरण और स्वास्थ्य

© डॉ.उमा कान्त सिंह, डॉ. संजय कुमार सिंह

संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89457-81-0

Rs. 850

कनक प्रकाशन

ब्रांच ऑफिस : एल-9ए, गली नं. 42,
सादतपुर एक्सटेंशन, दिल्ली - 110094
हेड ऑफिस : मकान नं. 43, बल्दिहॉ, सैदाबाद,
प्रयागराज, उ.प्र. - 221508
मोबाइल : 8750728055, 8368613868
ई-मेल : kanakprakashan@gmail.com

प्रिन्टर्स :

आर्यन ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना v

1. कोविड 19 और पर्यावरण 1
   –डॉ. सुनीता कुमारी
2. पर्यावरण प्रदूषण और समाज पर उसका प्रभाव 15
   –डॉ. मंजू गुप्ता
3. पर्यावरण और समाज 26
   –डॉ. जयसिंह बी. झाला
4. कोविड – 19 और स्वास्थ्य 34
   –डॉ. एम. पी. मेहता
5. पर्यावरणीय मनोविज्ञान 44
   –डॉ. जे. आर. बामरोटिया
6. कृषि प्रदूषण एवं चुनौतियाँ 62
   –हरेंद्र यादव, डॉ. चिन्तामणि देवी
7. पर्यावरण संरक्षण के विविध आयाम 75
   –सुबोध कुमार
8. लखनऊ नगर में जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरणीय समस्यायें 95
   –डॉ. अंजना सिंह, डॉ. श्वेता
9. वैश्विक आपदा : कोरोना वायरस का पर्यावरण पर प्रभाव 104
   –डॉ0 आभा शुक्ला

9

वैश्विक आपदा : कोरोना वायरस का पर्यावरण पर प्रभाव

डॉ0 आभा शुक्ला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
पी0पी0एन0 पी0जी0 कॉलेज, कानपुर।

पर्यावरण - पृथ्वी के उद्भव के बहुत बाद में पर्यावरण का निर्माण हुआ इसके निर्माण की प्रकिया नितान्त मन्द गति से अनवरत सकिय रही। वायुमण्डल का निर्माण एवं इसकी घटनायें पर्यावरण के निर्माण एवं विकास में निरन्तर सहयोग देती रही है। कालान्तर में भूतल पर एक भौतिक पर्यावरण के निर्माण के साथ ही मानव विशिष्ट प्राणी के रूप में उत्पन्न हुआ जो चिन्तन, कृतित्व एवं व्यक्तित्व से परिपूर्ण होते हुए समस्त जैविक-अजैविक संघटनों के विषय में सोचते हुए पर्यावरण के उपादानों का उपयोग एवं उनकी सुरक्षा कर सकता है, परन्तु मानव स्वार्थ से अन्धा होकर पर्यावरण के विनाश में संलग्न हो गया। वास्तव में Environment शब्द फ्रेंच भाषा के Environer शब्द से बना है, जिसका तात्पर्य समस्त परिस्थितिकी होता है जिसमें सभी स्थितियाँ, परिस्थितियाँ, दशायें आदि जो वनस्पतियों एवं जीव-जन्तुओं को प्रभावित करती है, सम्मिलित है।

COVID-19
Its Global Impact

Editor
Annapurna Dixit

KANISHKA PUBLISHERS, DISTRIBUTORS
NEW DELHI 110002

82

KANISHKA PUBLISHERS, DISTRIBUTORS
4697/5-21A, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi -110 002
Phones : 2327 0497, 2328 8285
Fax : 011-2328 8285
E-mail : kanishka_publishing@yahoo.co.in

COVID-19: Its Global Impact

First Published 2020

© Editor

ISBN : 978-93-89484-76-2

PRINTED IN INDIA

Published by Madan Sachdeva for Kanishka Publishers, Distributors, 4697/5-21A, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110 002, Typeset by Sunshine Graphics, Delhi, and Printed at Rajdhani Printers, Delhi.

29. The Next Normal Workplace–Aftermath of COVID-19
Snigdha 375

30. Economic Upliftment of Ethnic and Rural Population through Joint Forest Management and Non-Timber Forest Products
Gopal Dixit and Shilpa Vakshasya 381

31. Impact Analysis of COVID-19 on Environment: A Case Study of India
Yogendra Narayan Singh 392

32. The Understanding of Environmental Health during Covid-19 Pandemic: Future Perspectives
Amresh Kumar and Jagriti Rai 400

33. Impact of COVID-19 on Indian Economy Analysis of Keynesian Slowdown to Keynesian Tailspin and Remedial
Maniklal Adhikary and Parimal Ghosh 410

34. Post–COVID Crisis Impacting Globalisation: Trends and Perspectives
Mukulika Hitkari and Alka Asthana 428

List of Contributors 437

Index 441

34

Post–COVID Crisis Impacting Globalisation: Trends and Perspectives

Mukulika Hitkari and Alka Asthana

The present scenario has been almost in entirety victimised by the "Coronisation" of the world–which has adversely impacted the growth of an already slowdown economy. In the post-covid Lockdown phase being a requirement crisis as envisaged or, as we can say, mandatory lockdown phase being a requirement, few positive sunny sides have certainly sprung up, viz. awareness towards personal hygiene & health, sanitisation, family values, respect for our culture, spirituality and legacy of traditions, understanding the correlation between limited resources and lifestyle; and–rendering human efforts futile–self-restoration of Nature. Though post-covid economy has also adverse implications regarding employment, widening disparities, incomes, fiscal instability and migration challenges yet the fact cannot be denied that we would get an evident chance of witnessing a paradoxical perspective of covid impact–which needs a thorough perusal. The masses are learning to gradually to revert to the Principal of "Needonomics–paving" way for greater requirement of Protectionist Policies for industries treading towards employment generation as also ruralisation. Significantly, in adherence to the campaign of Make in India, prospects could bring a ray of hope as

विश्व भाषा के रूप में

हिन्दी

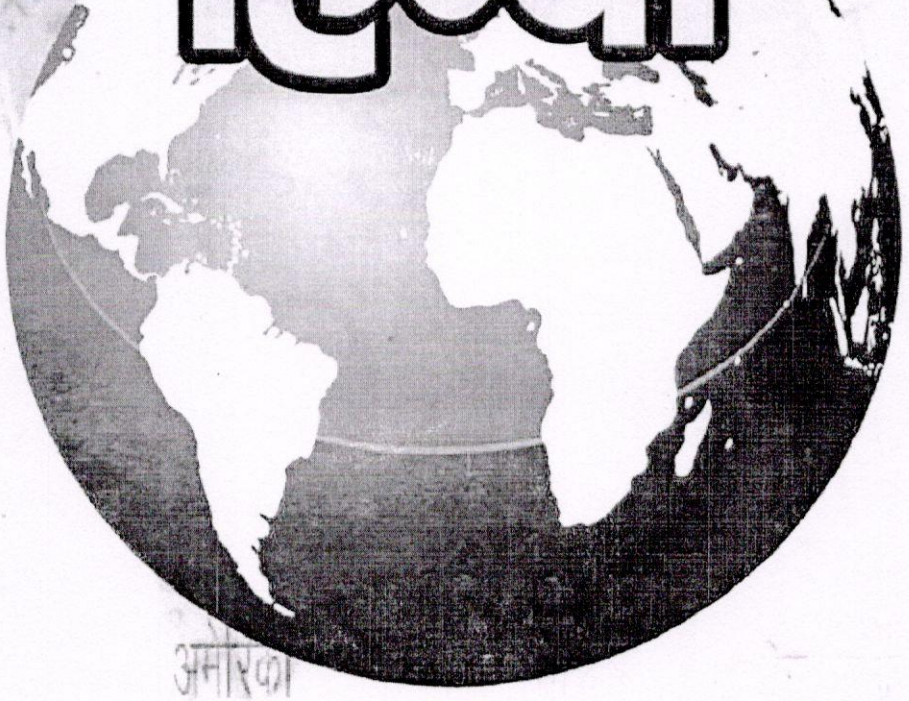

डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव

पुस्तक : विश्व भाषा के रूप में हिन्दी
लेखक : डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव
प्रकाशक : **आराधना ब्रदर्स**
प्रकाशक एवं वितरक
124/152-सी, गोविन्द नगर, कानपुर-208 006
0512-2651490, 09935007102
E-mail : aradhanabooks@gmail.com
ISBN : 978-81-944454-0-1
संस्करण : प्रथम 2020
मूल्य : ₹ 500/-
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : ज्ञानोदय प्रिन्टर्स, कानपुर

Vishwa Bhasha Ke Roop Mein Hindi

By : Dr. Virendra Singh Yadav

Price : Five Hundred Only.

खण्ड–3

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी के बढ़ते कदम

19. संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर हिन्दी की भूमिका

डॉ0 प्रीति सिंह 117

20. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी

श्रुति मिश्रा 121

खण्ड–4

हिन्दी के उत्थान में विविध माध्यम एवं संस्थाओं की भूमिका

21. हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में पुस्तकालयों की भूमिका

डॉ0 दिनेश कुमार सक्सेना 124

22. वैश्विक फलक पर हिन्दी व समाज

डॉ0 अंशु केडिया 128

23. वैश्वीकरण,बाजारीकरण और भाषा का संबंध

डॉ0 आनंद कुमार 134

24. जनसंचार में हिन्दी की भूमिका

डॉ0 शिखा सक्सेना 141

25. हिन्दी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ : सूचना अधिकार अधिनियम के विशेष सन्दर्भ में

माधुरी साहू 144

26. हिन्दी भाषा के विकास में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का योगदान

अरूण कुमार मौर्य 148

27. इक्कीसवीं सदी में हिन्दी की दशा और दिशा

अखिलेश कुमार 154

21.

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में पुस्तकालयों की भूमिका

डॉ0 दिनेश कुमार सक्सेना

यह तथ्य सर्व विदित है कि हिन्दी भाषा विश्व में दूसरी सबसे ज्यादा आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। भारत तथा संसार के अन्य देशों के लगभग 50 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा बोलते है तथा हिन्दी भाषा को समझ सकने वाले लोगों की सख्या 80 करोड़ से कहीं अधिक है। हिन्दी भाषा की लिपि एवं ध्वनि की जनक प्राचीन भाषा संस्कृत को माना जाता हैं क्योंकि इसकी वर्णमाला एवं अधिकतम शब्द संस्कृत भाषा से लिये गये है।

स्वंतत्र भारत की राजभाषा के सम्बन्ध में 14 सितम्बर 1949 ई0 को संविधान सभा के द्वारा लिये गये निर्णयानुसार हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित की गयी तथा संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया कि देवनागरी लिपि कि साथ हिंदी भारत की राजभाषा होगी। भारत तथा हिन्दी एक दूसरे के पूरक जैसे हैं। विश्व में यदि किसी भी स्थान पर भारत की बात होती हैं तो बात करने वालों के जेहन में हिन्दी भाषा की बात भी अवश्य आ जाती है। भारतीय समाज में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता तथा उपयोगिता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत के राष्ट्र पिता महात्मा गॉधी जी ने कहा था कि "

हिन्दी भाषा भारतीय जनमानस की भाषा है।"

भारतीय समाज में हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिये समय–समय पर अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जैसे पुस्तक मेला,कवि सम्मेलन,सेमिनार इत्यादि इसी कम में साल का एक दिन 14 सितम्बर को हिन्दी भाषा के लिये समर्पित कर दिया गया है जिसे हिन्दी दिवस के रूप में देश भर में मनाया जाता है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान–आगरा तथा विभिन्न राज्यों में स्थित हिन्दी संस्थान इस क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसी क्रम में हिन्दी के विकास में विभिन्न संस्थानों, महाविद्यालयों तथा विश्व–विद्यालयों के पुस्तकालयों की भी अग्रणी भूमिका है।

चूंकि उपरोक्त समस्त संस्थानों का सबंध सबसे अधिक युवावर्ग व किशोरों से होता हैं। अतः दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि इन

Environmental Challenges & Issues in Present Scenario

Editors

Dr. Pravin Kumar Singh
Dr. Abhishek Srivastava
Dr. Vishal Srivastava
Dr. Ranjeet Kumar

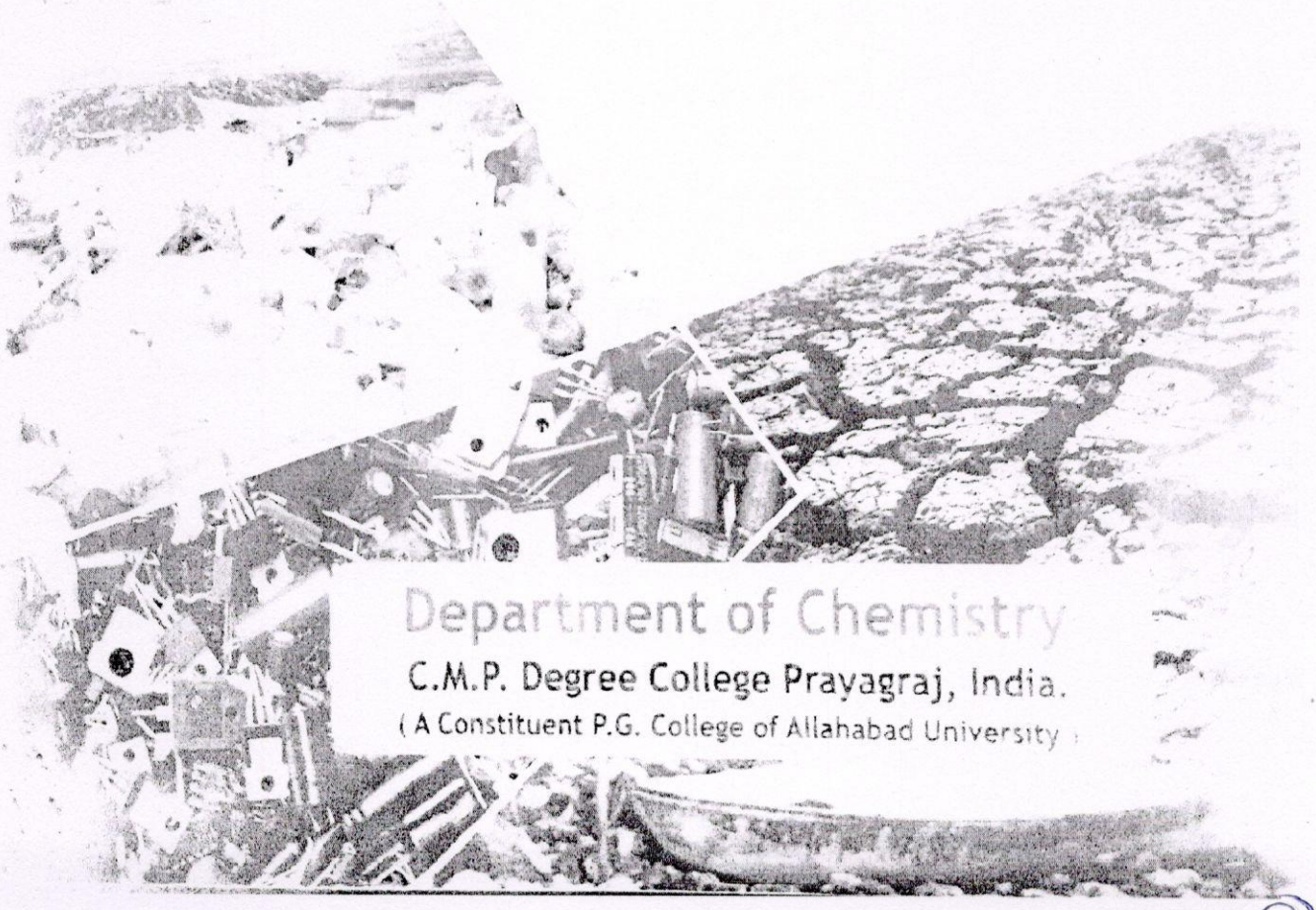

Department of Chemistry
C.M.P. Degree College Prayagraj, India.
(A Constituent P.G. College of Allahabad University)

ENVIRONMENTAL CHALLENGES AND ISSUES IN PRESENT SCENARIO
Editors: Pravin K. Singh, Abhishek Srivastava,
Vishal Srivastava and Ranjeet Kumar
ISBN: 978-93-88018-18-0
Edition: 2019

Chapter - 6

Utilization of Fruits and Vegetable Waste (FVW) products for Extraction of Natural Dyes: a move towards Green Chemistry

Sudha Agarwal [1], Nidhi Srivastava*[1] and Kambo Neelu[2]
[1]PPN Degree College Kanpur
[2]Utter Pradesh Textile Technology Institute Kanpur
*Email: nidhi.srivastava2006@gmail.com

Introduction

The quality of life on Earth is linked in extricably to the overall quality of the environment. In early times, it is believed that human race can use an unlimited abundance of land and resources. But rapid industrialization and technological advancements have resulted in severe environmental pollution[1].

Fruits and vegetables have a crucial role in our diet and human life, and therefore the demand for such important food commodities has increased very significantly, as a result of the growing world population and the changing dietary habits[2,3].

Higher production and growth, and the lack of proper handling methods and infrastructure, have led to huge losses and waste of these important food commodities as well as their components and by products and residues. The United Nations Food and Agriculture Organization (FAO) have estimated that at least one third of the food produced in the world (estimated as 1.3 billion metric tons) is lost and wasted every year[4].

Fruits and vegetables losses and waste do not represent only the wasting of food commodities but also indirectly includes wasting of critical resources such as land, water, fertilizers, chemicals, energy and labour. Immense quantities of lots and waste food commodities also contribute to immense environmental problems, as they decompose in landfills and emit harmful green house gases[5]. WSDE (1994) report revealed that reduction of waste increases profit, reduces liability, lower water uses and also create good public relations[6].

Fruits and vegetables are the most utilized commodities among all horticultural crops. They are consumed raw, minimally processed, as well as processed, due to their nutrients and health promoting compounds. With the growing population and changing diet habits, the production and processing of horticultural crops, especially fruits and vegetables, have increased very significantly to fulfil the increasing demands. Significant

91

स्वतंत्रता आंदोलन

राष्ट्रीय भावना और हिंदी साहित्य

संपादक

डॉ. मधुरबाला यादव

पुस्तक : स्वतंत्रता आंदोलन : राष्ट्रीय भावना और हिंदी साहित्य
संपादक : डॉ. मधुरबाला यादव
प्रकाशक : विद्या प्रकाशन
सी-449, गुजैनी, कानपुर -22
दूरभाष : (0512) 2285003
मो. : 09415133173
Website: www.vidyaprakashankanpur.com
E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
संस्करण : प्रथम 2019
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मुद्रक : श्री पूजा प्रिन्टर्स, नौबस्ता, कानपुर
मूल्य : ₹ 700/-
ISBN : 978-93-86248-86-2

Swatantrata Aandolan
Rashtriya Bhavna Aur Hindi Sahitya

Edited by : Dr. Madhurbala Yadav
Price : Seven Hundred Only.

13. हिन्दी साहित्य में बुंदेलखण्ड की राष्ट्रीय चेतना
– डॉ0 अजय सिंह यादव 86
14. 'आधुनिक हरिऔध' पं0 बाबूराम गुबरेले का व्यक्तित्व एवम् कृत्तित्व
– डॉ. जितेन्द्र कुमार द्विवेदी 94
15. सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत 'निराला'– अरूण प्रताप यादव 101
16. स्वतन्त्रता आन्दोलनं से प्रभावित आधुनिक हिन्दी काव्य–रचनाएँ(भारतेन्दु युग से छायावादोत्तर युग तक)
– डॉ. निशा सेंगर 108
17. आधुनिक हिन्दी कविता में स्वतंत्रता आन्दोलन की अनुगूंज
– डॉ. निरंजन कुमार यादव 116
18. राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना के कवि – डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन'
–डॉ. कृष्ण कान्त दुबे 125
19. 'आधुनिक हरिऔध' पं0 बाबूराम गुबरेले की रचनाओं में देश प्रेम व प्राकृतिक दशाएँ – डॉ. प्रतिमा शुक्ला 135
20. स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता का प्रदेय
– डॉ. राहुल शुक्ला, अरुण कुमार 139
21. स्वतंत्रता आन्दोलन और राष्ट्रभाषा के कवि डॉ0 महेन्द्र भटनागर
– अल्का रानी 145
22. आचार्य नरेन्द्रदेव स्वतन्त्रता आन्दोलन, राष्ट्रभाषा और हिन्दी साहित्य – डॉ. अंजू अवस्थी 148
23. राष्ट्र, संस्कृतिः भारतीय युवा पीढ़ी – डॉ. अनुज कुमार मिश्रा 152
24. पुनर्जागरण काल में राष्ट्रवादी चेतना का स्वरूप – सुधा देवी 162
25. हिन्दी का आधुनिक काल और राष्ट्रीय कवि
–प्रीतिजा अग्निहोत्री, दीपेश द्विवेदी 164
26. अमृतलाल नागर के उपन्यास एवं राष्ट्रीय चेतना
– पुष्प लता कुमारी 167
27. सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीयता की गूंज
– वैशाली सालियन 174
28. मुक्तिबोध की काव्य यात्रा : व्यष्टि से समष्टि तक–निधि अग्रवाल 178
29. राष्ट्रीय चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति : छायावाद
–गिरीश चन्द्र शुक्ला 185

23. राष्ट्र, संस्कृतिः भारतीय युवा पीढ़ी

डॉ. अनुज कुमार मिश्रा

मानव और पशु दोनों में कुछ मूल प्रवृत्तियां पायी जाती हैं। आहार, निद्रा, भय, मैथुन। पशु अपनी पाशविक प्रवृत्तियों से ही संचालित होता है। परंतु मनुष्य में विवेक के कारण इसे श्रेष्ठ माना गया। यह श्रेष्ठता भोग के विशेषाधिकार की न होकर स्वंय सहित सम्पूर्ण चराचर जगत के कल्याण का हेतु बनने के लिए है। कागभुसुंडिजी गरुड़जी से कहते हैं कि "नर तन सम नहिं कवनिउ देहि। जीव चराचर जाचत तेही"[1] इसी तरह अरस्तू महोदय ने कहा कि श्रेष्ठ होने से ही मनुष्य ने अपनी पूर्णता "राजनीतिक और सामाजिक जीवन"[2] में खोजी इसलिए प्रत्येक समाज ने प्रारम्भ से ही मानव को सामाजिक जीवन के संस्कारों में ढालने का प्रयास किया है। आज का युग भिन्न है, इसलिए कुछ इसे संक्रमण काल (Twilight Period) कहते इसलिए इसमें तथा समस्त पक्षों में तरह तरह के अन्तर्दवन्द निहित है। राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्य इनके प्रतिनिधि माने जा सकते हैं, युवाशक्ति भविष्य के लिए इन मूल्यों के स्थानांतरण की अनिवार्य कड़ी। अपने शोधपत्र में इसी के मूल्यात्मक विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

19वीं सदी वह "निर्णायक काल" है जिसने आधुनिक समय में भारत की सभ्यता के पतन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह आज भी सत्य है कि भारत दुनिया की एकमात्र जीवित सांस्कृतिक इकाई है जिसकी निरंतरता की जड़े इतिहास में पीछे सात हजार वर्ष तक जाती है। ग्रामीण जीवनपद्धति में रचे बसे सभ्यतागत अवशेष उसकी सुदीर्घता के प्रमाण है। इस संचित संभ्यता के ज्ञानकोश का हम प्रयोग कैसे करें, इंस निरंतरता को संभाल कर गुणवत्तापूर्ण जीवन में

गाँधी वैचारिकी

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. मीनाक्षी शर्मा

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

गाँधी वैचारिकी

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-56-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

विषय सूची

	समर्पण	*v*
	भूमिका	*vii*
	आभार ज्ञापन	*xiii*
	योगदान सूची	*xvii*
1.	महात्मा गांधी : संक्षिप्त परिचय *–डॉ. स्मिता*	1
2.	महात्मा गाँधी का रामराज्य *–सुरेश कुमार सिंह, डॉ. कालूराम*	8
3.	गांधी की स्वदेशी मीमांसा *–डॉ. अनुज कुमार मिश्रा*	16
4.	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में गाँधीवाद की प्रासंगिकता *–सुरेश कुमार सिंह*	30
5.	गांधी की हत्या का रोमांच *–डॉ. एस. एन. वर्मा, डॉ. अनुज कुमार सिंह*	38
6.	रंगे शिकस्त : सुबह–बहारे–नजारा है *–रुपा सिंह*	46
7.	हिन्दी के ललित–निबंध साहित्य पर महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव *–डॉ. गजेन्द्र भारद्वाज*	58

3

गांधी की स्वदेशी मीमांसा

"जमीन पर आधार रखने वाले कष्ट पाते रहे, मगर जीवित रहे; शहरों में लोग फले–फूले और धीरे–धीरे नष्ट हो गए।"[1]

–मिरियम बियर्ड

"नेताओं की हृदयशुद्धि आवश्यक है। तभी वे आम लोगों का मार्गदर्शन कर सकेंगे। आज इसका अभाव है। पहले आपको असंदिग्ध भाषा में घोषणा करनी चाहिए कि आप किस बात का समर्थन करते हैं और फिर उपयुक्त व्यक्तिगत उदाहरण से इसका समर्थन करना चाहिए।"[2]

–महात्मा गांधी

"भारत मेरी धमनियों में बह रहा था... फिर भी मैंने एक अजनबी आलोचक की नजर से उसे समझा क्योंकि मुझे उसका वर्तमान पूरी तरह नापसंद था। साथ ही मेरी जानकारी में उसके अतीत के कई अवशेष ऐसे थे जिनसे मुझे गहरी अरुचि थी। एक तरह से मैं भारत के नजदीक पश्चिम के जरिए आया और उसे एक हमदर्द पश्चिमवासी की निगाह से देखा। भारत के नजरिए और चेहरे को बदलने के लिए आतुर और बेचैन था। मैं उसे आधुनिकता का लबादा पहनाना चाहता था। पर मेरे दिमाग में शंकाओं ने सिर उठा लिया।"[3]

–जवाहरलाल नेहरू, 1946

मिरियम बियर्ड और महात्मा गांधी एक दिशा में बात कर रहे हैं और पंडित नेहरू दूसरी दिशा में। गांधी जी ने नेहरू को भारत के लिए अपना